सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 109, नई दिल्ली, शनिवार 28 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

असफलता जीवन का एक हिस्सा है, और इससे डरने की बजाय, हमें इससे सीखना चाहिए

03 'मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन फिर होंगे गिरफ्तार'...
06 दुर्लभ चंद्रमा क्रिस्टल जो पृथ्वी को शक्ति दे सकता है
08 पुरी में कड़ी सुरक्षा के बीच AI की कड़ी नजर

दिल्ली में 1 जुलाई से इन वाहनों को नहीं मिलेगा पेट्रोल-डीजल, सरकार और पुलिस ने कर ली पूरी

संजय बाटला

दिल्ली सरकार ने 1 जुलाई से 10 साल से पुराने डीजल और 15 साल से पुराने अन्य वाहनों को ईंधन न देने का फैसला किया है। यह कदम वायु प्रदूषण को कम करने के लिए उठाया गया है, क्योंकि वाहनों का धुआं प्रदूषण का एक बड़ा कारण है। ऐसे वाहनों को जब्त भी किया जा सकता है। दिल्ली के कई पेट्रोल पंपों पर पुराने वाहनों की पहचान के लिए एनपीआर कैमरे लगाए गए हैं। परिवहन विभाग और ट्रैफिक पुलिस ने इस योजना के लिए पूरी तैयारी कर ली है और उन्हें लोगों व डीलरों से सहयोग की उम्मीद है।

नई दिल्ली। दिल्ली में दस वर्ष और उससे अधिक पुराने डीजल वाहनों और 15 वर्ष से अधिक पुराने वाहनों को ईंधन नहीं मिलेगा। इसके लिए दिल्ली सरकार का परिवहन विभाग और ट्रैफिक पुलिस पूरी तैयारी कर चुकी है।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएएम) के मुख्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में दिल्ली सरकार के परिवहन सचिव निहारिका राय और ट्रैफिक पुलिस के विशेष सचिव अजय चौधरी ने उम्मीद जाहिर करते हुए कहा कि इस पहल से दिल्ली में कानून व्यवस्था की कोई समस्या नहीं आएगी। लोग और डीलर सहयोग करेंगे।

विरेन्द्र शर्मा, तकनीकी सदस्य, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग

एनसीआर के वातावरण में पीएम 2.5 के कारण होने वाले प्रदूषण में वाहनों के धुंए की भागीदारी 28 प्रतिशत है। सल्फर आक्साइड के प्रदूषण में 41 प्रतिशत और नाइट्रोजन ऑक्साइड के प्रदूषण में 78 प्रतिशत है।

सबसे बड़ी चुनौती है कि बीएस 6 से कम मानक के वाहन चल रहे हैं। अकेले दिल्ली में 62 लाख वाहन उम्र पूरी कर चुके हैं। जिसमें 41 लाख दोपहिया और 18 लाख चार पहिया वाहन हैं।

एनसीआर से संबंधित हरियाणा के जिलों में ऐसे वाहन 27.5 लाख, उत्तर प्रदेश में 12.4 लाख और राजस्थान में 6.1 लाख हैं। एनपीआर कैमरे लगने की पहल दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग ने की। इसके बाद सीएक्यूएएम ने पूरे एनसीआर में ये कैमरे लगाने की समय सीमा तय की है।

निहारिका राय, परिवहन सचिव, दिल्ली सरकार

परिवहन विभाग ने जागरूकता के लिए काफी प्रचार प्रसार किया है। डीलर और सतर्कता एजेंसियों के साथ बैठक भी है। एक जुलाई से उम्र पूरी कर चुके कोई वाहनों को पेट्रोल व डीजल नहीं दिया जाएगा।

ऐसे वाहन जब्त किए जाएंगे। जिन पेट्रोल पंपों पर उम्र पूरी कर चुके वाहन अधिक आते हैं ऐसे हाट स्पाट पर अभी उन पर फोकस अधिक होगा। दिल्ली में अभी 498 फ्यूल स्टेशनों पर एनपीआर कैमरे लग चुके हैं।

इसमें 382 पेट्रोल व डीजल फ्यूल स्टेशन और 116 सीएनजी स्टेशन शामिल हैं। डीलर सहयोग करेंगे। परिवहन विभाग ने जो टीम गठित की है उसमें डीलरों के प्रतिनिधि इसमें शामिल किए गए हैं।

अजय चौधरी, विशेष आयुक्त, ट्रैफिक पुलिस

उम्मीद है कि कानून व्यवस्था की कोई समस्या नहीं आएगी। इसके लिए पुलिस ने पूरी तैयारी की है और लोग स्वैच्छा से ऐसे वाहन जमा करा देंगे।

नोएडा एयरपोर्ट के तीसरे और चौथे चरण में लोगों के विस्थापन की तैयारी शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के तीसरे और चौथे चरण के लिए लोगों के विस्थापन की तैयारी शुरू हो गई है। जिला प्रशासन 4 से 11 जुलाई तक 14 गांवों के किसानों की आपत्तियों को दूर करने के लिए लोक सुनवाई करेगा। इस चरण के लिए कुल 2053 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता है, जिसमें से 14 गांवों से 1888.98 हेक्टेयर भूमि अधिग्रहित की जाएगी। लगभग 9036 परिवार विस्थापित होंगे।

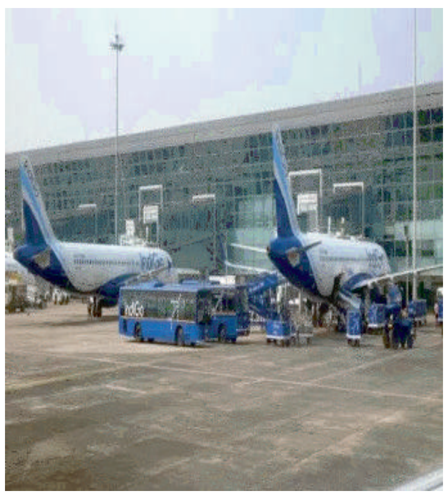

ग्रेटर नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के तीसरे और चौथे चरण में लोगों के विस्थापन की तैयारी शुरू कर दी गई है। इसको लेकर जिला प्रशासन के अधिकारियों द्वारा 14 गांव के किसानों की चार से 11 जुलाई तक लोक सुनवाई के माध्यम से आपत्तियां दूर की जाएंगी।

एयरपोर्ट के तीसरे और चौथे चरण में कुल 2053 हेक्टेयर जमीन की आवश्यकता है। इसके लिए 14 गांव की 1888.98 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण किया जाएगा, बाकी की जमीन प्रशासन के पास पहले से ही उपलब्ध है।

जिन 14 गांवों की जमीन अधिग्रहित की जानी है, उनमें रोही, पारोही, बंकापुर, दयानतपुर, सबौता मुस्तफाबाद, मुकीमपुर शिवारा, किशोरपुर, बनवारीबांस, जेवर बांगर, रामनेर, अहमदपुर चौरोली, ख्वाजपुर, थोरा व नीमका शहाजहांपुर शामिल हैं।

भूमि अधिग्रहण करने के लिए किसानों से सहमति मांगी जा चुकी है। अब इन्हें विस्थापित करने की तैयारी चल रही है। इन गांवों में 18 वर्ष से कम उम्र के 10847 बच्चे, 16343 पुरुष और 15243 महिलाएं हैं। वहीं, अधिग्रहण से प्रभावित करीब 9036 परिवार विस्थापित होंगे। इनमें 7977 पुरुष और 1385 महिलाएं शामिल हैं।

जानिए किस गांव के ग्रामीणों की कब होगी लोक सुनवाई गांव का नाम लोक सुनवाई की तारीख रोही, पारोही, बंकापुर- 4 जुलाई दयानतपुर, सबौता, मुकीमपुर- 5 जुलाई किशोरपुर, बनबारीबांस- 7 जुलाई जेवर बांगर, रामनेर- 8 जुलाई अहमदपुर चीरौली, ख्वाजपुर- 9 जुलाई थोरा- 10 जुलाई नीमका शाहजहांपुर- 11 जुलाई

दिल्ली-एनसीआर के इस शहर में ऑटो ड्राइवरों पर ताबड़तोड़ हो रही कार्रवाई, 3881 का कटा चालान

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम यातायात पुलिस ने बिना वर्दी के ऑटो, ई-रिक्शा और टैक्सी चालकों के खिलाफ एक विशेष अभियान चलाया है। इस अभियान के तहत 1 से 26 जून तक 3881 चालान किए गए और 29.21 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। पुलिस चालकों को यात्रियों के साथ मधुर व्यवहार करने, निर्धारित गति से वाहन चलाने और मोबाइल का उपयोग न करने के बारे में भी जागरूक कर रही है।

गुरुग्राम। यातायात नियमों को ताक में रखने वाले ऑटो, ई-रिक्शा और टैक्सी चालकों की मनमानी नहीं चलेगी। इसी कड़ी में बिना ड्रेस के चलने वाले चालकों के खिलाफ यातायात पुलिस ने अभियान चला रखा है।

इस अभियान के तहत पुलिस ने 3881 चालकों के चालान किए गए। इनके खिलाफ 29,21,500 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। बतादें कि पुलिस उपायुक्त यातायात डा. राजेश मोहन के निर्देश पर यातायात पुलिस ने यूनिफॉर्म न पहनकर चलने वाले ऑटो, ई-रिक्शा और टैक्सी चालकों के खिलाफ विशेष चालान अभियान चलाया गया।

अभियान के तहत 01 से 26 जून तक कुल 3881 चालकों के खिलाफ चालान की कार्रवाई की गई। पुलिस उपायुक्त यातायात के मुताबिक, अभियान चलाकर ऑटो, ई-रिक्शा और टैक्सी चालकों को यात्रियों के साथ मधुर व्यवहार करने, वाहन को निर्धारित गति में चलाने, मोबाइल फोन का इस्तेमाल न करने आदि की जानकारी देकर जागरूक भी किया जा रहा है।

दिल्ली में सड़कों को लेकर मास्टर प्लान तैयार, अब जल्दी नहीं टूटेंगी; मरम्मत का खर्च भी घटेगा

दिल्ली की सड़कों पर जल्द ही प्लास्टिक का इस्तेमाल होने वाला है। इससे सड़कों की उम्र दो साल बढ़ जाएगी और जल्द टूटने की समस्या से भी निजात मिलेगी। प्लास्टिक मिक्स सामग्री की सड़क बनाने के लिए दिल्ली सरकार सीआरआरआई से मदद लेने पर विचार कर रही है।

नई दिल्ली। सड़कें ज्यादा दिनों तक चलें, इसे देखते हुए राष्ट्रीय राजधानी में प्लास्टिक वाली सड़कों का दौर शुरू होने वाला है। इससे सड़कों की उम्र दो साल और बढ़ जाएगी। जल्द टूट जाने की समस्या से भी निजात मिल सकती है। प्लास्टिक मिक्स सामग्री की सड़क बनाने के लिए दिल्ली सरकार सीआरआरआई (केंद्रीय सड़क अनुसंधान संगठन) से मदद लेने पर विचार कर रही है।

सीआरआरआई भी इसके लिए तैयार है, जल्द ही बैठक होने की संभावना है। कुछ साल पहले सीआरआरआई ने प्रयोग के तौर पर दिल्ली कैंट में ऐसी सड़क बनाई थी, जिसके परिणाम बेहतर आए हैं। विज्ञानियों का मानना है कि एक किमी सड़क बनाने में एक टन तक प्लास्टिक कचरे का उपयोग किया जा सकता है। भाजपा की सरकार आने के बाद से सरकार सड़कों की दशा को लेकर चिंतित है, जो पिछले 10 साल में अक्सर खराब ही रही हैं। इस समस्या से जनता को सबसे ज्यादा जूझना पड़ा है।

इसे ध्यान में रखते हुए सरकार अब सड़कों की मजबूती और लंबे समय तक चलने वाली सड़क बनाने की रणनीति के तहत प्लास्टिक वाली सड़कों पर विचार कर रही है।

सफल रहा है इसका प्रयोग

प्लास्टिक कचरा मिक्स सड़कें बनाने का प्रयोग कुछ साल पहले दिल्ली में कैंट एरिया में किया गया था। जहां सदर बाजार रोड को बनाया गया था, जो आज तक अच्छी हालत में है। इससे पहले भी कुछ स्थानों पर इसका प्रयोग किया गया था, जो सफल रहा है।

ऐसे तैयार होता है प्लास्टिक का कचरा

सीआरआरआइ के विज्ञानियों के अनुसार, सड़क बनाने के लिए कोल तार व रोड़ी मिक्स सामग्री में प्लास्टिक के उस कचरे को शामिल किया जाता है, जो बेकार हो चुकी प्लास्टिक की वस्तुओं को मशीनों द्वारा काटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में तैयार किया जाता है। मानक के अनुसार, एक किमी सड़क बनाने में लगभग एक टन तक ऐसा कचरा उपयोग किया जा सकता है।

सड़कों को लेकर अभी ये है स्थित

दिल्ली में लोक निर्माण विभाग के पास 1,259 किमी सड़कें हैं। ये सड़कें प्रमुख हैं, जिन पर शहर का अधिक दबाव रहता है। विभाग की मानें, तो सड़क पांच साल तक चलने में ही खराब हो जाती है, इस दौरान कई बार मरम्मत भी करानी पड़ती है। अधिकारियों के अनुसार, सड़क पर भरने वाले पानी के कारण भी जल्दी सड़कें खराब होती हैं।

हम दिल्ली सरकार से इस बारे में बात कर रहे हैं, उम्मीद है जल्द मुख्यमंत्री के साथ इस बारे में बैठक होने की संभावना है। भाजपा सरकार सड़कों को लेकर बेहतर काम करने के प्रयास में है। अगर इस तकनीक को अपनाया जाता है तो जनता को बहुत लाभ मिल सकेगा।

- डॉ. अंबिका बहल, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीआरआरआई

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स ने लंबित मांगो को पूरा करवाने के लिए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को सौंपा ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स के एक प्रतिनिधि मण्डल ने अपनी लंबित मांगो को पूरा करवाने के लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी से दिल्ली सचिवालय में उनसे मिल कर अपनी मांगो का ज्ञापन भी दिया.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की हमने अपनी लंबित मांगो के लिए भूतपूर्व सरकार के खिलाफ लगातार 10 सालो तक आंदोलन किये है.

संजय सम्राट का कहना है आज की यें मीटिंग बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई.

जिनमे मुख्य मांगे निम्नलिखित है :-

1. डीजल /पेट्रोल BS 4 टैक्सी बसों की जो लाइफ रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट में है उतनी टैक्सी बसें हमारी चलानी चाहिए, चाहे वो किसी भी राज्य में पंजीकृत हो.

2. पेनिक बटन टैक्सी बसों में से हटना चाहिए. इसमें करोडो रूपए का भ्ष्टाचार 10 सालो से हो रहा है. यें प्लास्टिक के बटन है जिसके हम 20 हजार रूपए दिल्ली परिवहन विभाग को मजबूर हो कर दें रहे है. क्योंकि पेनिक बटन के बगैर कोई भी गाडी पंजीकृत नहीं हो सकती दिल्ली में.

3. स्पीड लिमिट डिवाइस आल इंडिया टूरिस्ट टैक्सी बसों से हटना चाहिए. क्योंकि इसमें हमारी गाड़ियों की स्पीड हाईवे या एक्सप्रेस वे पर भी 80 किलोमीटर प्रति घंटा बाँध दी गई है, जबकि दूसरी सारी गाड़ियों की स्पीड 120 किलोमीटर प्रति घंटा है.

4. हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन नंबर प्लेट अभी भी हजारों गाड़ियों में नहीं लगे है. और 200 रुपए की (HSRP) नंबर प्लेट के 1000 रुपए तक लिए जा रहे है, जिसमे करोडो रुपए के घपले की संभावना है ? इसकी जांच करी जाए और जब तक सब गाड़ियों में HSRP नहीं लग जाती सारी गाड़ियों में तबतक उनकी फिटनेस या परमिट नवनिकारण रोका ना जाए.

5. दिल्ली में पर्यटन आयोग या ट्रांसपोर्टर्स आयोग बनाया जाए. जिस से ट्रांसपोर्टर्स की समस्याओ को खुद ट्रांसपोर्ट आयोग/पर्यटन का चेयरमैन सुनकर तुरंत उन समस्याओ का निदान कर सके.

6. आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी बसों को दिल्ली एनसीआर के कमिसन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट द्वारा लागू ग्रेड सिस्टम से बाहर करा जाए.क्योंकि हमारी टैक्सी बसों की किस्तें जाती है और इस से हमारी रोजी रोटी चलती है. बल्कि पिछली सरकार द्वारा किये गए प्रदूषण की आड़ में 20 हजार के सारे पुराने ट्रैफिक/इनफ़ोर्समेंट के चालान माफ़ किये जाए.

7. केंद्र सरकार के परिवहन मंत्रालय ने हमारे एक साल के 500 रुपए के आल इंडिया टूरिस्ट परमिट को 3 लाख रूपए तक कर दिया. ये 3 लाख का परमिट डेली बस सर्विस वालो के लिए फायदेमंद हैं. लेकिन 90% ट्रांसपोर्टर्स के लिए नुकसान दायक हैं क्योंकी काफी बार पर्यटन का काम ही नहीं चलता. अगर काम नहीं होगा तो हम खड़ी गाड़ियों के 3 लाख क्यों देंगे ? हमारी काफी टैक्सी बसें सिर्फ एक राज्य से दुसरे राज्यों में ही जाती है फिर हम सारे राज्यों का टैक्स क्यों भरेंगे ? इस परमिट को दोनों तरिके से देने का प्रवधान करा जाए जैसे इतने सालो से ये परमिट दिया जा रहा हैं. जिसको जैसी सहूलियत लगे वो वैसे परमिट लें.

8. दिल्ली की सारी पंजीकृत टैक्सी बसों से MCD टोल टैक्स भी हटाया जाए. क्योंकी हम दिल्ली की MCD को सालना पार्किंग चार्ज के नाम पर MCD टैक्स देते हैं, औऱ दिल्ली सरकार को रोड टैक्स भी देते हैं. ये MCD टैक्स दूसरे राज्यों की टैक्सी बसों पर लगे तो ठीक हैं.

आज मुख्यमंत्री जी ने ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन को अस्वासन दिया है की आप लोगो की मांगो पर गौर करके इनका समाधान करेंगे.

"रुचि और अरुचि दोनों लाभप्रद हैं।"

बेशक दोनों का संबंध अध्यात्म से होना चाहिए तभी। सांसारिक रुचि तो सभी में है पर वह बंधनकारी है। रुचि आध्यात्मिक होनी चाहिए जिसमें भी हो। कोई ग्रंथ, कोई महापुरुष, कोई स्थान विशेष जिससे आध्यात्मिक तरंगों का संचार होता हो।

मैं एक बार गणेशपुरी स्वामी मुक्तानंदजी के आश्रम में गया।

वहां स्वामीजी की समाधि के पास पहुंचते ही मैंने अनुभव किया मेरे शरीर में तीव्र कंपन होने लगा है अपने आप।

वहां से हटने पर कंपन शांत हो गया।

निश्चय ही यह उस जगह का प्रभाव था।उस स्थान में गुरु शक्ति जाग्रत थी या वहां कुंडलिनी शक्ति जाग्रत हो सकती थी स्थल विशेष के प्रभाव से।

नितांत बहिर्मुखी को संभव है उसका पता न चले।

ग्रहणशील पात्रता चाहिए।

और किसी में नहीं तो अच्छे लोगों में तो सबको रुचि होती ही है।

कायर भी साहसी की प्रशंसा करता है।चोर भी ईमानदारी से बंटवारा करते है। बेईमानी करें तो झगडे हो जायें।

घृणा करने वाला भी उसे प्रेम करने वाले को तो पसंद करता ही है।

क्रोधी,शांत से संतुलित रहता है।

उसे शांति मिलती है।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

अच्छे लोग या अच्छाई में रुचि सभी की होती है इसमें नहीं तो उसमें।

जहां जिसमें भी रुचि हो उसे गहराये,बढाये।

यह देख लेना चाहिए कि मेरी स्वाभाविक रुचि उसमें है या नहीं,तो ही उसका प्रभाव होगा।

अरुचि वाले के लिए और उपाय है। लेकिन उसका प्रकार भिन्न है।

रुचि का प्रयोग केवल जिसमें रुचि हो उसीके लिए है।

अरुचि तो फिर सभी के लिए है।

विचारों के लिए यह रामबाण उपाय है।

जिस विचार पर ध्यान दिया जाता है उसका बल बढता है।

ध्यान न दिया जाय तो बल घटता है।

कोई ऐसा भी हो सकता है जो ध्यान न देना चाहे,तो भी ध्यान जाता है।

शक्तिशाली चित्त इसी तरह तो भटकता है।इधर ध्यान जाता है,उधर ध्यान जाता है।

कहीं-कहीं से तो बिल्कुल हटता नहीं।हटाने की कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिलती।

विचार चाहे जितने आयें उसके लिए उपाय बताया-

उसमें रुचि मत लो।'

यह भी कठिन हो जाता है। लगता है रुचि न लेना अपने हाथ में नहीं है।रुचि होती है तो होती है।

किसी में रुचि,किसी से अरुचि।

यही तो राग-द्वेष है जिसके कारण चित्त अस्थिर बना रहता है।चित्त स्थिर हो तो चमत्कार हों। शक्ति प्रकट हो जाती है।

ये सब विचार वहीं से आते हैं।

चित्त,चिति शक्ति है।

कोई साधारण, मामूली हंसी-खेल की बात नहीं है।

विचारों के दुरुपयोग से हानि उठानी पड़ती है तो सदुपयोग से लाभ भी संभव है।

और कुछ नहीं तो ऐसा सोच भी सकते हैं -

मेरी इसमें रुचि नहीं है, उसमें रुचि नहीं है।

जो जो याद आता जाय बस एक ही विचार,एक ही संकल्प-

₹रुचि नहीं है।₹

यह सारे द्वंद्वों को काट देता है।यह वैराग्य शस्त्र का काम करता है जो संसार रुपी वृक्ष की जड़ों को काट देता है जैसा कि कृष्ण ने कहा -

₹अश्वत्थमेनं सुविरुढमूलमसंगशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।।₹

कृष्ण ने कहा-इस संसारवृक्ष का स्वरुप जैसा कहा है वैसा यहां विचार काल में नहीं पाया जाता।₹

यह बडी महत्वपूर्ण बात है। सभी लोगों के विचार अलग-अलग हैं,उनके कर्म भिन्न हैं।जो जैसा है वैसा ही करता है।

इसके मूल में है तो वही चिति शक्ति जिससे अलग-अलग लोग अलग-अलग ढंग से अपना कार्य करते रहते हैं। कोई क्या करता है, कोई क्या करता है?

विविधता स्पष्ट है।

मगर ₹रुचि नहीं है₹ यह विचार,यह संकल्प तो सभी पर एक सा लागू होता है।

यह निर्द्वंद्व होने में भी सहायक है।

सुख? रुचि नहीं।दुख ?रुचि नहीं।

लाभ ?रुचि नहीं।हानि? रुचि नहीं।

मान? रुचि नहीं। अपमान? रुचि नहीं।

मान में रुचि होगी तो ही तो अपमान प्रभावित करेगा।

मान में रुचि न हो तो कौन अपमान का दंश दे सकता है।

₹रुचि नहीं है₹ ये शब्द सारे मानसिक जाल में से बाहर निकाल सकते हैं।

सराहना,प्रशंसा, सांत्वना के शब्दों की जरूरत क्यों?

प्रसिद्धि की लालसा किसलिए?

लोग मुझे जानें.

इससे क्या होगा?

यही तो ₹बनना₹ है।

अपने ₹होने₹ को छोड देना है।

हम अपने ₹होने₹ से संतुष्ट क्यों नहीं हैं?

₹बनना₹ तो सतह पर आना है।

₹होना₹ गहराई में आना है।

गहराई सब एक कर देती है।

सतह पर सैंकड़ों लहरें हैं।

गहराई में केवल सागर का ही अखंड साम्राज्य है।

इसलिए जो जो साधक गहराई में उतरते हैं उनमें तुलना, प्रतिस्पर्धा,आकांक्षा आदि की वृत्ति स्वतःशांत होने लगती है।

सिर्फ अन्य साधक ही नहीं, संसारी से भी तुलना समाप्त हो जाती है।

कोई भी संसारी,संसारी थोडे ही है,हर आदमी चेतन शक्ति है स्वयं में।इससे ध्यान हटकर मन-बुद्धि के राग-द्वेष में उलझ जाता है इसलिए उसे लगता है वह संसारी है जबकि हर व्यक्ति आध्यात्मिक है।

जो मांगें उसे संसारी बनाती हैं मूलतः वे आध्यात्मिक हैं।

हर आदमी को स्थायी शांति,स्थायी सुख, स्थायी स्वतंत्रता चाहिए।

अस्थाई से काम चलाता है इसलिए वह संसारी हो जाता है-

तथाकथित संसारी।

वास्तव में तो यह सब उसे स्थायी रुप से चाहिए।

और वह आध्यात्मिक है।

जब प्रयोग किया जाता है तब अपनी रुचि को पहचान लेता चाहिए कि मेरी रुचि, रुचि में है या अरुचि में है?

एक साथ दोनों का प्रयोग करना बाधक है।वह तो राग-द्वेष के बंधन में पड़ना ही है।

किसीको शास्त्रीय संगीत में,शांत ध्यान संगीत में रुचि है तो उसमें डूबे।

किसी को व्यक्तियों में जैसे स्त्रियों में रुचि हो जैसा कि क ई लोगों में होता है तो वह उसके साथ प्रेम और सम्मान को भी जोड दे।

असीम आदर का अनुभव करने से रुचि नष्ट नहीं होगी अपितु परिष्कृत जरुर हो जायेगी, मंगलकारी हो जायेगी।

ध्यान रहे स्त्री पुरुष का भेद केवल देह दृष्टि से है, आत्मदृष्टि से नहीं।

देह दृष्टि से दोनों प्रकृति हैं,

आत्मदृष्टि से दोनों पुरुष हैं।

कृष्ण का कथन है-प्रकृति में स्थित पुरुष सुख-दुखों का भोक्ता है।'

शरीर तो हर जन्म में बदलते हैं मगर जीवात्मा जब जिस शरीर में होता है तब स्वयं को वही मान लेता है।यह देहाभिमान बंधन बन जाता है।

फिर मनुष्य देह ही नहीं है, प्रकृति ने लाखों शरीर रच रखे हैं।

हमारे वृक्ष पर आकर कोयल बैठ जाय,हम सोचते हैं कोयल है।

कोयल नहीं है,वह तो केवल एक शरीर है,रुप है, वास्तव में तो उसके भीतर परम आदरणीय और शक्तिशाली जीवात्मा बैठा हुआ है जिसके लिए कृष्ण कहते हैं -

इस देह में यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है।

कोई एक या दो नहीं, सृष्टि में जहां जितने भी जीव हैं वे सब परमात्मा का ही सनातन अंश हैं।

उनका अनादर ईश्वर का अनादर है,उनकी सेवा ईश्वर की सेवा है।

किसी शरीर की सेवा भी प्रकृति की ही सेवा है।

चितिरुपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत।

नमस्तस्यै।।नमस्तस्यै।।

नमस्तस्यै नमो नमः।।

ऐसा नहीं है कि हम जीव का तो आदर करेंगे मगर देह का नहीं करेंगे।

जब मूल को पहचान लिया जाता है तब सब आदरणीय हो जाता है।

'सियाराम मय सब जग जानी।

करऊं प्रनाम जोरी जुग पानी।।'

''वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।'

' ॐ ब्रह्म सर्वम्।

शुभ जगन्नाथ यात्रा

जगन्नाथ रथ यात्रा शुरू हो रही है। 27 जून 2025 को भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्री जगन्नाथ जी यानी श्रीकृष्ण अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ नगर भ्रमण पर निकलेंगे। जहां भक्त मंदिर में भगवान के दर्शन के लिए जाते हैं, वहीं साल में एक बार भगवान अपने भक्तों से मिलने के लिए उड़ीसा के पुरी में रथ यात्रा के जरिए नगर भ्रमण करते हैं और इस दौरान अपनी मासी के घर भी जाते हैं। इस पूरी प्रक्रिया को जगन्नाथ रथ यात्रा कहते हैं।

यह परंपरा केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि सांस्कृतिक महत्व रखती है। हर साल जगन्नाथ रथ यात्रा आषाढ़ माह में शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से शुरू होती है और शुक्ल पक्ष के 11वें दिन जगन्नाथ जी की वापसी के साथ यात्रा का समापन होता है। रथ यात्रा में शामिल होने के लिए देश दुनिया से भक्त पुरी पहुंचते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, रथ यात्रा में शामिल होने वाला और भगवान का रथ खींचने वाला 100 यज्ञ करने के बराबर का पुण्य प्राप्त करता है।

विनायक चतुर्थी आज

सनातन धर्म में चतुर्थी तिथि पर भगवान गणेश की विशेष पूजा की जाती है। साधक गणपति बप्पा की कृपा पाने के लिए चतुर्थी तिथि पर व्रत भी रखते हैं। इससे काम में सिद्धि एवं सफलता मिलती है। साथ ही सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है। इसके लिए बड़ी संख्या में साधक चतुर्थी तिथि पर भगवान गणेश की पूजा एवं भक्ति करते हैं। हर महीने कृष्ण और शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि से एक दिन पहले चतुर्थी का व्रत रखा जाता है। धार्मिक मत है कि भगवान गणेश की पूजा करने से आर्थिक संकटों से मुक्ति मिलती है। साथ ही घर में सुख, समृद्धि एवं खुशहाली आती है।

विनायक चतुर्थी शुभ मुहूर्त

=====================
===

वैदिक पंचांग के अनुसार, आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 28 जून को सुबह 09 बजकर 53 मिनट पर शुरू होगी। वहीं, 29 जून को सुबह 09 बजकर 14 मिनट पर चतुर्थी तिथि समाप्त होगी। तिथि गणना से 28 जून को विनायक चतुर्थी मनाई जाएगी।

विनायक चतुर्थी शुभ योग

=====================

ज्योतिषियों की मानें तो आषाढ़ माह की विनायक चतुर्थी पर दुर्लभ हर्षण योग का संयोग बन रहा है। हर्षण योग का संयोग शाम 07 बजकर 15 मिनट तक है। इसके साथ ही रवि योग का भी संयोग है। रवि योग सुबह 06 बजकर 35 मिनट से लेकर अगले दिन यानी 29 जून को सुबह 05 बजकर 26 मिनट तक है। इन योग में स्नान-ध्यान कर भगवान गणेश की पूजा करने से आरोग्य जीवन का वरदान मिलेगा। साथ ही सभी प्रकार के मनोरथ सिद्ध होंगे।

विनायक चतुर्थी व्रत क्यों महत्वपूर्ण है

=====================
=======

गणपति की कृपा से उसे बल-बुद्धि, सुख-सौभाग्य का आशीर्वाद प्राप्त होता है। गणपति की कृपा से उसके सारे काम सिद्ध होते हैं। इसके अलावा घर में सुख-समृद्धि का वास होता है और जीवन में आने वाली परेशानियों से छुटकारा मिलता है। विनायक चतुर्थी गणपति के विनायक रूप को समर्पित है। इस दिन व्रत पूजन करने से उनका आशीर्वाद मिलता है।

विनायक चतुर्थी पर व्रत पूजा की विधि

=====================
===

इस दिन सुबह उठकर सभी कामों से निवृत होकर स्नान करें।

इसके बाद घर या मंदिर में भगवान गणेश जी की पूजा करने के लिए साफ कपड़े पहनें।

पूजा शुरु करते हुए साधक को गणेश मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

इसके बाद पूजा में पुष्प, धूप, चंदन, मिठाई, फल, और पान का पत्ता इत्यादि चढ़ाएं। भगवान गणेश को उनके प्रिय मोदक का भोग लगाएं।

'ओम सिद्धिविनायकाय नमः', 'ओम गं गणपतये नमः' मंत्र का कम से कम 108 बार जाप करें।

धूप दीप जलाकर भगवान गणेश की कथा का पाठ करें। आरती करें।

शाम के समय दोबारा गणेश भगवान की पूजा करें। प्रसाद बांटें और फलाहार कर अगले दिन व्रत पूरा करें।

लू लगने से मृत्यु क्यों होती है?

हम सभी धूप में घूमते हैं फिर कुछ लोगों की ही धूप में जाने के कारण अचानक मृत्यु क्यों हो जाती है?

हमारे शरीर का तापमान हमेशा 37 डिग्री सेल्सियस होता है, इस तापमान पर ही हमारे शरीर के सभी अंग सही तरीके से काम कर पाते है।

पसीने के रूप में पानी बाहर निकालकर शरीर 37 सेल्सियस टेम्प्रेचर मेंटेन रखता है, लगातार पसीना निकलते वक्त भी पानी पीते रहना अत्यंत जरुरी और आवश्यक है।

पानी शरीर में इसके अलावा भी बहुत कार्य करता है, जिससे शरीर में पानी की कमी होने पर शरीर पसीने के रूप में पानी बाहर निकालना टालता है। (बंद कर देता है)

जब बाहर का टेम्प्रेचर 45 डिग्री के पार हो जाता है और शरीर की कूलिंग व्यवस्था ठप्प हो जाती है, तब शरीर का तापमान 37 डिग्री से ऊपर पहुँचने लगता है।

शरीर का तापमान जब 42 सेल्सियस तक पहुँच जाता है तब रक्त गरम होने लगता है और रक्त में उपस्थित प्रोटीन पकने लगता है।

स्नायु कड़क होने लगते हैं इस दौरान सांस लेने के लिए जरुरी स्नायु भी काम करना बंद कर देते हैं।

शरीर का पानी कम हो जाने से रक्त गाढ़ा होने लगता है, ब्लडप्रेशर low हो जाता है, महत्वपूर्ण अंग (विशेषतः ब्रेन) तक ब्लड सप्लाई रुक जाती है।

व्यक्ति कोमा में चला जाता है और उसके शरीर के एक-एक अंग कुछ ही क्षणों में काम करना बंद कर देते हैं, और उसकी मृत्यु हो जाती है।

गर्मी के दिनों में ऐसे अनर्थ टालने के लिए लगातार थोड़ा-2 पानी पीते रहना चाहिए और हमारे शरीर का तापमान 37 मेन्टेन किस तरह रह पायेगा इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कृपया 12 से 3 बजे के बीच घर, कमरे या ऑफिस के अंदर रहने का प्रयास करें।

तापमान 40 डिग्री के आस पास विचलन की अवस्था मे रहेगा।

यह परिवर्तन शरीर मे निर्जलीकरण और सूर्यातप की स्थिति उत्पन्न कर देगा।

कृपया स्वयं को और अपने जानने वालों को पानी की कमी से ग्रसित न होने दें।

किसी भी अवस्था में कम से कम 3 लीटर पानी जरूर पियें। किडनी की बीमारी वाले प्रति दिन कम से कम 6 से 8 लीटर पानी जरूर लें।

जहां तक सम्भव हो ब्लड प्रेशर पर नजर रखें। किसी को भी हीट स्ट्रोक हो सकता है।

ठंडे पानी से नहाएँ। इन दिनों मांस का प्रयोग छोड़ दें या कम से कम करें।

फल और सब्जियों को भोजन मे ज्यादा स्थान दें।

एक बिना प्रयोग की हुई मोमबत्ती को कमरे से बाहर या खुले मे रखें, यदि मोमबत्ती पिघल जाती है तो ये गंभीर स्थिति है।

शयन कक्ष और अन्य कमरों मे 2 आधे पानी से भरे ऊपर से खुले पात्रों को रख कर कमरे की नमी बरकरार रखी जा सकती है।

अपने होठों और आँखों को नम रखने का प्रयत्न करें।

श्री कृष्ण पिता वसुदेव जी के पूर्वजन्म की कथा

कश्यप ऋषि विशाल यज्ञ का आयोजन कर रहे थे। इस यज्ञ को संपन्न कराने के लिए कश्यप वरूण देव के पास गए और उनसे एक ऐसी दिव्य गाय प्रदान करने की प्रार्थना की जिसकी कृपा से वह यज्ञ कार्य पूरा कर सकें।

मुनि का यज्ञ पूर्ण हो जाए यह सोच कर वरूण देव ने कश्यप ऋषि को एक दिव्य गाय दे दी। अनेक दिनों तक यज्ञ चलता रहा. दिव्य गाय की कृपा से यज्ञ का सारा प्रबंध निर्विघ्न होता रहा।

जब यज्ञ पूरा हो गया तो कश्यप ऋषि के मन में लोभ पैदा हो गया. वह वरूण देव से गाय तो केवल यज्ञ को पूरा करने के लिए मांग कर लाए थे लेकिन उनके मन में लालच आ गया।

कश्यप अब उस दिव्य गाय को वापस लौटाने से हिचक रहे थे. यज्ञ पूरा होने के काफी समय बाद भी जब कश्यप ने गाय नहीं लौटाई तो वरूण देव कश्यप के सामने प्रकट हो गए।

वरूण ने कहा- ऋषिवर आपने गाय यज्ञ पूर्ण कराने के लिए ली थी. वह स्वर्ग की दिव्य गाय है. उद्देश्य पूर्ण हो जाने पर उसे स्वर्ग में वापस भेजना होता है. यज्ञ पूर्ण हुआ अब वह गाय वापस कर दें।

कश्यप बोले- हे वरूण देव ! किसी तपस्वी को दान की गई कोई वस्तु कभी वापस नहीं मांगनी चाहिए. आपके लिए उस गाय का कोई मूल्य नहीं. आप इसे मेरे आश्रम में ही रहने दें. मैं उसका पूरा ध्यान रखूंगा।

वरूण देव ने अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास किया कि वह उस गाय को इस प्रकार पृथ्वी पर नहीं छोड़ सकते परंतु कश्यप नहीं माने. हारकर वरूण देव ब्रह्मा जी के पास गए और सारी बात बताई।

वरूण देव ने ब्रह्मा से कहा- हे परम पिता ! मैंने तो सिर्फ यज्ञ अवधि के लिए गाय दी थी परंतु कश्यप गाय लौटा ही नहीं रहे. अपनी माता की अनुपस्थिति में दुखी बछड़े प्राण त्यागने वाले हैं. आप राह निकालें।

ब्रह्मा जी वरूण को लेकर कश्यप के आश्रम में आए और बोले- कश्यप तुम विद्वान हो. तुम्हारे अंदर ऐसी प्रवृति कैसे आ रही है, इससे मैं स्वयं दुखी हूं. लोभ में पड़कर तुम अपने पुण्यों का नाश कर रहे हो. वरूण की गाय लौटा दो।

ब्रह्मा जी के समझाने पर कश्यप गाय को अपने पास ही रखने के तर्क देने लगे. वह उलटा समझाने का प्रयास करने लगे कि गाय अब उनकी ही संपत्ति है. इस लिए लोभ की कोई बात ही नहीं।

ब्रह्मा जी क्रोधित हो गए और कहा- लोभ के कारण तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई. ऋषि होकर भी तुम्हें ऐसा लोभ हुआ है. यह पतन का कारण है. तुम्हारे प्राण एक गाय में अटके हैं. मैं शाप देता हूं कि तुम अपने अंश से पृथ्वी पर गौपालक के रूप में जाओ।

शाप सुनकर कश्यप को बड़ा क्षोभ हुआ. उन्हें अपराध बोध हुआ और उन्होंने ब्रह्मा जी से और वरूण देव दोनों से क्षमा मांगी. ब्रह्मा जी का क्रोध शांत हो गया. वरूण को भी पछतावा हो रहा था कि कश्यप को ऐसा शाप मिल गया।

ब्रह्मा जी ने शाप में संशोधन कर दिया- तुम अपने अंश से पृथ्वी पर यदुकुल में जन्म लोगे. वहां तुम गायों की खूब सेवा करोगे. स्वयं श्री हरि तुम्हारे पुत्र के रूप में जन्म लेकर तुम्हें कृतार्थ करेंगे।

कश्यप शाप को वरदान में परिवर्तित होता देखकर प्रसन्न हो गए. उन्होंने ब्रह्मा जी की स्तुति की. कश्यप ने ही भगवान श्री कृष्ण के पिता वसुदेव के रूप में धरती पर जन्म लिया।

सनातन धर्म की दुर्लभ जानकारी...

दो लिंग : नर और नारी।
दो पक्ष : शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
दो पूजा : वैदिकी और तांत्रिकी (पुराणोक्त)।
दो अयन : उत्तरायन और दक्षिणायन।
तीन देव : ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
तीन देवियां : महा सरस्वती, महा लक्ष्मी, महा गौरी।
तीन लोक : पृथ्वी, आकाश, पाताल।
तीन गुण : सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण।
तीन स्थिति : घन, द्रव, वायु।
तीन स्तर : प्रारंभ, मध्य, अंत।
तीन पड़ाव : बचपन, जवानी, बुढ़ापा।
तीन रचनाएं : देव, दानव, मानव।
तीन अवस्था : जागृत, मृत, बेहोशी।
तीन काल : भूत, भविष्य, वर्तमान।
तीन नाड़ियां : इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना।
तीन संध्या : प्रातः, मध्याह्न, सायं।
तीन शक्ति : इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति।
चार धाम : बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम्, द्वारका।
चार मुनि : सनत, सनातन, सनंद, सनत कुमार।
चार वर्ण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
चार निति : साम, दाम, दंड, भेद।
चार वेद : सामवेद, ॠग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।
चार स्त्री : माता, पत्नी, बहन, पुत्री।
चार युग : सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलयुग।
चार समय : सुबह,दोपहर, शाम, रात।
चार अप्सरा : उर्वशी, रंभा, मेनका, तिलोत्तमा।
चार गुरु : माता, पिता, शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु।
चार प्राणी : जलचर, थलचर, नभचर, उभयचर।
चार जीव : अण्डज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज।
चार वाणी : ओम्कार्, अकार्, उकार, मकार्।
चार आश्रम : ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास।
चार भोज्य : खाद्य, पेय, लेह्य, चोष्य।
चार पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।
चार वाद्य : तत्, सुषिर,अवनद्ध, घन।
पांच तत्व : पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल, वायु।
पांच देवता : गणेश, दुर्गा, विष्णु, शंकर, सुर्य।
पांच ज्ञानेन्द्रियां : आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
पांच कर्म : रस, रुप, गंध, स्पर्श, ध्वनि।
पांच उंगलियां : अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा।
पांच पूजा उपचार : गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।
पांच अमृत : दूध, दही, घी, शहद, शक्कर।
पांच प्रेत : भूत, पिशाच, वैताल, कुष्मांड, ब्रह्मराक्षस।
पांच स्वाद : मीठा, चर्खा, खट्टा, खारा, कड़वा।
पांच वायु : प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।
पांच इन्द्रियां : आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा, मन।
पांच वटवृक्ष : सिद्धवट (उज्जैन), अक्षय वट (प्रयागराज), बोधिवट (बोधगया), वंशीवट (वृंदावन), साक्षी वट (गया)।
पांच पत्ते : आम, पीपल, बरगद, गुलर, अशोक।
पांच कन्या : अहिल्या, तारा, मंदोदरी, कुंती, द्रौपदी।
छ ॠतु : शीत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, बसंत, शिशिर।
छ ज्ञान के अंग : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।
छ कर्म : देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, दान।
छ दोष : काम, क्रोध, मद (घमंड), लोभ (लालच), मोह, आलस्य।
सात छंद : गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जगती।
सात स्वर : सा, रे, ग, म, प, ध, नि।
सात सुर : षड्ज, ॠषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद।
सात चक्र : सहस्त्रार, आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान, मूलाधार।
सात वार : रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।
सात मिट्टी : गौशाला, घुड़साल, हाथी साल, राज द्वार, बाम्बी की मिट्टी, नदी संगम, तालाब।
सात महाद्वीप : जम्बुद्वीप (एशिया), प्लक्षद्वीप, शाल्मली द्वीप, कुशद्वीप, क्रौंच द्वीप, शाकद्वीप, पुष्कर द्वीप।
सात ॠषि : वशिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व, भारद्वाज, अत्रि, वामदेव, शौनक।
सात ॠषि : वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, भारद्वाज।
सात धातु (शारीरिक) : रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य।
सात रंग : बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल।
सात पाताल : अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल।
सात पुरी : मथुरा, हरिद्वार, काशी, अयोध्या, उज्जैन, द्वारका, काञ्ची।
सात धान्य : गेहूं, चना, चांवल, जौ, मूंग,उड़द, बाजरा।
आठ मातृका : ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री, वाराही, नारसिंही, चामुंडा।
आठ लक्ष्मी : आदि लक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतान लक्ष्मी, वीर लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी।
आठ वसु : अप (अहः/अयज), ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास।
आठ सिद्धि : अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।
आठ धातु : सोना, चांदी, तांबा, सीसा जस्ता, टिन, लोहा, पारा।
नवदुर्गा : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्र घंटा, कुष्मांडा, स्कन्द माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री।
नवग्रह : सुर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।
नवरत्न : हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, मूंगा, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनियां।
नवनिधि : पद्म निधि, महापद्म निधि, नील निधि, मुकुंद निधि, नंदनिधि, मकर निधि, कच्छप निधि, शंख निधि, खर्व/मिश्र निधि।
दस महाविद्या : काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्तिका, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला।
दस दिशाएं : पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैॠत्य, वायव्य, ईशान, ऊपर, नीचे।
दस दिक्पाल : इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैॠिति, वरुण, वायुदेव, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनंत।
दस अवतार (विष्णुजी) : मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।
दस सती : सावित्री, अनुसुइया, मंदोदरी, तुलसी, द्रौपदी, गांधारी, सीता, दमयंती, सुलक्षणा, अरुंधती।
नए भारत का वैश्विक संकल्प...
सनातन वैदिक धर्म...विश्व धर्म
अखंड हिंदु राष्ट्र भारत...विश्व गुरु भारत

धर्मो रक्षति रक्षितः...

यहां शरीर तो लाखों लोग सोने जैसा पा लेते हैं, परंतु भीतर अहंकार, व्यमनस्य, क्रोध इत्यादि सब भरा पड़ा है।

यहां प्रेम की सुवास कैसे होगी? भीतर तो कूड़ा-कर्कट सड़ रहा है। यहां सुन्दरतम देह तो मिल सकती है, लेकिन भीतर तो कुरूपता की गंध गहरा रही है। सुन्दर आत मा पाने के लिए हमें किसी मीरा/सहजो/लल्ला, जैसी स्वर्ण आत मा पाने के लिए भीतरी स्वच्छता/सरलता/सहजता जगानी होगी, तभी हम सुंदर देह और सुंदर आत्मा की सुवास पाएंगें, इससे पूर्व तृप ति कहां होगी? हमारे भीतर जो पनप रहा है वह बेहोशी के कारण ही विकराल रूप धरता जा रहा है। इससे मुक्ति के लिए किसी धारणा से, या व्रत से , या संकल प की आवश्यकता नहीं है। ध्यान का मार्ग खुद-ब-खुद अपना मार्ग बना लेता है। ध्यान से हमारा होश जागृत होता है और होश में कुछ/कोई पाप होता ही नहीं। भगवान बुद्ध ने तो पाप-पुण य की परिभाषा ही 'होश' से की है। हम जो भी होश से करेंगें, वही पुण य हो जाता है और जो भी हम बे-होशी में करतें हैं वहीं पाप बन जाता है। वास्तव में पाप-पुण्य की इससे अच छी परिभाषा हो ही नहीं सकती।

'मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन फिर होंगे गिरफ्तार', एसीबी ने अचानक ऐसा क्यों कहा?

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली एसीबी ने 2000 करोड़ रुपये से अधिक के क्लासरूम घोटाले में पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और पूर्व पीडब्ल्यूडी मंत्री सत्येंद्र जैन के खिलाफ पर्याप्त सबूत मिलने के बाद उन्हें गिरफ्तार करने का फैसला किया है। दोनों नेताओं से पूछताछ की गई थी, लेकिन संतोषजनक जवाब नहीं मिले। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने सिसोदिया को निर्णयों के लिए जिम्मेदार ठहराया है। ईडी की जांच में भी मनी लॉन्ड्रिंग के सबूत मिले हैं, जिससे इस मामले में उनकी मुश्किलें बढ़ गई हैं।

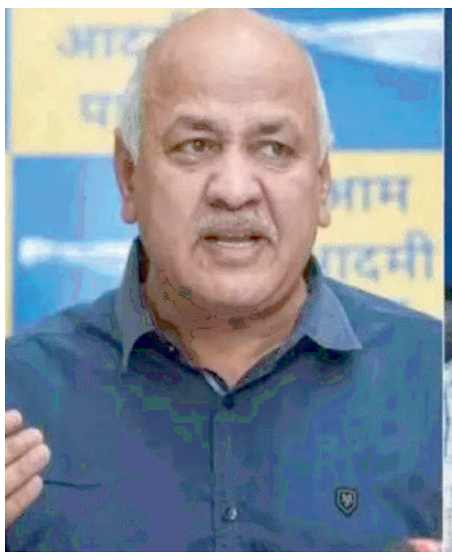

नई दिल्ली। दो हजार करोड़ से अधिक के क्लासरूम घोटाले में भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) को पूर्ववर्ती दिल्ली सरकार में उप मुख्यमंत्री व शिक्षामंत्री रहे मनीष सिसोदिया और पीडब्ल्यूडी मंत्री रहे सत्येंद्र जैन के खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य मिल चुके हैं। इसके आधार पर एसीबी ने दोनों पूर्व मंत्रियों को गिरफ्तार करने का निर्णय लिया है।

इनकी गिरफ्तारी के बाद निर्माण कार्य से जुड़े ठेकेदारों व पीडब्ल्यूडी के इंजीनियर समेत बिचौलिये को भी गिरफ्तार किया जा सकता है। आबकारी घोटाला व मनी लांड्रिंग मामले में सिसोदिया व सत्येंद्र जैन लंबे समय तक जेल में रहने के बाद पिछले कई माह से नियमित जमानत पर बाहर हैं। अब क्लासरूम घोटाले में दोनों नेताओं की सिरदर्दी एक बार फिर बढ़ सकती है।

छह जून को हुई थी पांच घंटे तक पूछताछ

एसीबी चीफ संयुक्त आयुक्त मधुर वर्मा का कहना है कि बीते छह जून को इस मामले में पहले सत्येंद्र जैन से करीब पांच घंटे तक पूछताछ की गई थी। कई सवाल के जवाब में उन्होंने क्लासरूम के निर्माण के बारे में सारे निर्णय शिक्षा विभाग के होने और कैबिनेट में लिए गए फैसले बताया था लेकिन इस संबंध में दस्तावेज अथवा अधिकारिक ईमेल आदि मुहैया कराने की मांग करने पर वे कोई भी साक्ष्य नहीं दे पाए।

जांच अधिकारी का कहना है कि जैन से उन्हें संतोषप्रद जवाब नहीं मिल पाया। उनसे पूछताछ के बाद नौ जून को सिसोदिया को बुलाया गया था लेकिन किसी कारण वश वह उस दिन पेश नहीं हो पाए थे। दूसरी बार 20 जून को उनसे सिविल लाइंस स्थित एसीबी मुख्यालय में करीब साढे तीन घंटे तक पूछताछ की गई। उनसे 37 से अधिक सवाल पूछे गए, जिनमें एक का भी जवाब वह सही तरीके से नहीं दे पाए।

शिक्षा विभाग के अधिकारी ने कहा- सारे निर्णय सिसोदिया के थे

पूछताछ में उन्होंने सारे निर्णय की जिम्मेदारी शिक्षा विभाग के अधिकारियों पर डालते रहे। जबकि शिक्षा विभाग के अधिकारी पहले ही साफ कर चुके हैं कि सारे निर्णय सिसोदिया के थे। उनके निर्देश पर ही सारा काम हुआ, तब उन्होंने ठेकेदारों को पैसों का भुगतान किया था। सारे बिलों पर सिसोदिया के हस्ताक्षर मिले हैं। मधुर वर्मा का कहना है कि दोनों मंत्रियों से पूछताछ में संतोषप्रद जवाब न मिलने के कारण उनसे दोबारा पूछताछ के लिए निर्णय किया गया था। लेकिन इस बीच पर्याप्त साक्ष्य मिल जाने के कारण उन्होंने अब आगे की कार्रवाई करने का निर्णय लिया है।

300 से अधिक पासबुक, मुहर व अन्य दस्तावेज मिले

18 जून को ईडी ने भी एसीबी की एफआइआर को आधार बनाकर मनी लॉन्ड्रिंग के तहत दिल्ली में 37 लोकेशन पर छापेमारी की। उक्त छापेमारी ठेकेदारों, शिक्षा विभाग व पीडब्ल्यूडी के सरकारी कर्मचारियों व बिचौलिये के घरों व कार्यालयों पर की गई। उन जगहों से पूर्व दिल्ली सरकार की फाइलें व 300 से अधिक पासबुक, मुहर व अन्य दस्तावेज मिले थे। श्रमिकों के नाम पर खाते खोले जाने का पता चला था। यह भी पता चला कि वैध लेनदेन की आड़ में सरकारी धन की हेराफेरी की गई। इसके बाद से एसीबी और ईडी के जांच अधिकारी आपस में साक्ष्यों को साझा कर रहे हैं। मामले की जांच और तेज कर दी गई है।

2019 में एसीबी को भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतें मिली

2019 में एसीबी को सरकारी स्कूलों में 2,892 करोड़ रुपये की लागत से 12,748 कक्षाओं के निर्माण में भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतें प्राप्त हुई थीं। दिए गए टेंडर के अनुसार, एक क्लास रूम के निर्माण की एकमुश्त लागत लगभग 24.86 लाख रुपये बताई गई, जबकि दिल्ली में ऐसे कमरे आमतौर पर लगभग पांच लाख रुपये में बनाए जा सकते हैं। इसमें अर्ध-स्थायी निर्माण किया गया, जिनकी जीवन अवधि 30 वर्ष है, लेकिन लागत आरसीसी के स्थायी निर्माण के बराबर थी, जो आमतौर पर 75 वर्षों तक चलते हैं। लागत अधिक होने के बावजूद एक भी काम निर्धारित समयावधि में पूरा नहीं हुआ। पूरा निर्माण कार्य 34 ठेकेदारों को दिया गया, जिनमें अधिकांश आप से जुड़े थे।

दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में बनेगा स्पेशल एडमिशन सेल, इन छात्रों को मिलेगा विद्यालयों में सीधा प्रवेश

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने स्कूल से वंचित या पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए सभी सरकारी स्कूलों में 'स्पेशल एडमिशन सेल' (एसएसी) गठित किए हैं। इसका लक्ष्य 6-14 वर्ष के बच्चों, विशेषकर सीडब्ल्यूएसएन को मुख्यधारा में लाना है। नियमित सर्वेक्षणों से पहचान कर, बिना दस्तावेजों के भी प्रवेश दिया जाएगा और दस्तावेज बनवाने में मदद मिलेगी। एससी/एसटी, शरणार्थी, बेघर या बाल मजदूर बच्चों को दाखिले से वंचित नहीं किया जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने स्कूल से कभी न जुड़ पाने वाले या बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों को दोबारा शिक्षा से जोड़ने के लिए बड़ा कदम उठाया है। समग्र शिक्षा अभियान के तहत राजधानी के सभी सरकारी स्कूलों में स्पेशल एडमिशन सेल (एसएसी) गठित किए जाएंगे। इसका मकसद कभी स्कूल न गए बच्चों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) को शिक्षा की मुख्यधारा में लाना है। प्रत्येक सेल में स्कूल प्रमुख, एडमिशन इंचार्ज, ईवीजीसी काउंसलर और क्लस्टर संसाधन केंद्र समन्वयक शामिल होंगे।

निदेशालय ने इसे स्थापित करने को लेकर एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) भी जारी की है, जिसमें साफ निर्देश हैं कि छह से 14 वर्ष के बच्चों को आरटीई के तहत अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा का अधिकार है। निदेशालय ने स्पष्ट किया कि बच्चों की पहचान नियमित सर्वे से की जाएगी, इसमें गर्मी व सर्दी की छुट्टियों में विशेष सर्वे होंगे। इसके लिए निर्माण स्थल, झुग्गी, रेलवे स्टेशन जैसे स्थानों पर बच्चों की तलाश की जाएगी।

सभी स्कूलों में सीडब्ल्यूएसएन विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षक होंगे और पहचान किए गए सभी बच्चों को बिना दस्तावेज के भी प्रवेश मिलेगा। अगर किसी छात्र के पास दस्तावेज नहीं है तो केवल अभिभावक का आवेदन या लिखित सहमति काफी मानी जाएगी और 30 दिन के लिए प्रोविजनल एडमिशन दिया जाएगा। इस दौरान शिक्षक बच्चे के दस्तावेज बनवाने में मदद करेंगे।

निदेशालय ने कहा कि कोई भी स्कूल एससी/एसटी, शरणार्थी, बेघर, अनाथ व बाल मजदूर बच्चों को दाखिले से वंचित नहीं करेगा। निदेशालय के मुताबिक अगर किसी क्षेत्र में 10 या उससे अधिक बच्चे स्कूल से बाहर पाए जाते हैं, तो संबंधित प्रधानाचार्य और क्लस्टर संसाधन समन्वयक मिलकर टीम बनाकर तुरंत सर्वे करेंगे, और बच्चों को तीन दिन के अंदर पास के स्कूलों में दाखिल कराएंगे।

दिल्ली विश्वविद्यालय में 'आपातकाल और भारतीय लोकतंत्र' विषय पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय की 'मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति' द्वारा में 'आपातकाल और भारतीय लोकतंत्र' विषय पर आज विश्वविद्यालय में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के आरंभ में आपातकाल में अपना बलिदान करने वाले हुतात्माओं के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता महाविद्यालय प्रो. बलराम पाणी ने संबोधित करते हुए कहा कि आपातकाल इस देश वह काला अध्याय है जिसे इस देश के नागरिक दुहाराना नहीं चाहते। यह वह भयावह स्मृति है जो देश को जागृत रखेगी और इस तरीके की नकारात्मक सत्ता के लोलुप लोगों को पुनः सत्ता का दुरुपयोग करने से बचाए रखेगी। राष्ट्र के निर्माण के लिए सकारात्मक राजनीति का होना जरूरी है. उन्होंने आगे कहा कि आपातकाल का यह भी सबक है कि राष्ट्र प्रथम हो, न कि कोई परिवार।

कार्यक्रम के अध्यक्ष और संयोजक प्रो. निरंजन कुमार, अध्यक्ष, मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति ने आपातकाल की भयावह स्मृति का जिक्र करते हुए कहा कि उस दौरान अनुछेद 21 के तहत हमें प्राप्त जीवन जीने के अधिकार को भी छीन लिया गया। प्रो. कुमार ने बताया कि आपातकाल के खिलाफ सर्वाधिक विरोध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने किया था और सर्वाधिक संख्या में स्वयंसेवक जेल गए थे। आपने आगे कहा कि इमरजेंसी वंशवाद और राजतंत्रीय मानसिकता की ही परिणति थी। वर्तमान में अनेक छद्म बुद्धिजीवी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पैरोकार बनते हैं किंतु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो चीरहरण आपातकाल के दौरान किया गया उस पर एक अघोषित चुप्पी इन तथाकथित बुद्धिजीवियों में दिखती है।

प्रो. निरंजन कुमार ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को भविष्य में आपातकाल जैसी फासीवादी एवं वंशवादी सोच का विरोध दर्ज करने की शपथ भी दिलाई।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय में विधि संकाय के प्रो. अनुराग दीप ने आपातकाल को शक्तियों का दुरुपयोग बताया। आपातकाल निरंकुश प्रवृतियों के उभार का समय था और लोकतंत्र के चारों स्तम्भों को ध्वस्त कर दिया गया था. आपने आपातकाल के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करते हुए विभिन्न महत्त्वपूर्ण तिथियों, साक्ष्यों के माध्यम से आपातकाल से जुड़े विभिन्न तथ्यों को श्रोताओं के समक्ष रखा।

कार्यक्रम में अतिथि वक्ता डॉ. दीपक जायसवाल, सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने सम्बोधन में आपातकाल को संविधान की आत्मा पर आक्रमण बताया। आपने उन साहित्यकारों को भी नमन किया जिन्होंने तत्कालीन विषम परिस्थितियों में रहते हुए भी अपने नागरिक और साहित्यिक कर्तव्यों के साथ समझौता न करते हुए आपातकाल के खिलाफ एवं देश हित में साहित्य लिखा।

कार्यक्रम के दौरान शोधार्थियों व छात्रों द्वारा आपातकालीन दौर पर काव्य पाठ किया गया। कार्यक्रम के अंत में अंग्रेजी विभाग की प्रोफ़ेसर गीता रानी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अनेक उच्च पदाधिकारी, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, शोधार्थी, छात्र और समाज के अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

फन वे लर्निंग एनजीओ द्वारा एक कैंप आयोजित किया गया, जिसमें फ्री चेकअप किए गए, जिनमें बीपी और शुगर टेस्ट शामिल थे

फन वे लर्निंग एनजीओ में बच्चों को सिलाई में सूट और चपाती कवर बनाना सिखाया गया

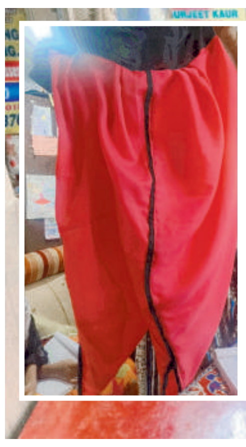

तीन दिवसीय बाल रंगमंच महोत्सव में बच्चों की प्रतिभा ने दर्शकों को किया मंत्रमुग्ध महोत्सव में हुआ 12 नाटकों का मंचन

-स्लम के बच्चों ने पुण्यशलोक अहिल्याबाई का मंचन कर किया आर्शचयचकित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। उड़ान – द सेंटर ऑफ थिएटर आर्ट एंड चाइल्ड डवलपमेंट एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय बाल रंगमंच महोत्सव में नन्हें कलाकारों की प्रतिभा ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। रंगकर्मी संजय टुटेजा के दिशा निर्देश में हुए इस मेगा महोत्सव में कुल 12 नाटकों का मंचन किया जिनके माध्यम से बच्चों ने जहां दर्शकों को हंसाया व रुलाया वहीं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का संदेश भी दिया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के समवेत सभागार में आयोजित तीन दिवसीय बाल रंगमंच महोत्सव ने राजधानी के रंगमंच प्रेमियों को भावविभोर कर दिया। इस महोत्सव का उद्घाटन डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए ने दीप प्रज्वलन कर किया। आईएएस अजय गर्ग एवं कला दर्शन विभाग की अध्यक्ष डॉ. प्रो. ऋचा कम्बोज विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे जबकि दूसरे दिन डीन प्रशासनिक व कलानिधि विभागाध्यक्ष डा प्रो रमेश चंद गौर ने तथा तीसरे दिन विभागाध्यक्ष संरक्षण डा अचल पाण्डया, ज्वाइंट सीपी दिल्ली पुलिस रजनीश गुप्ता व एडीजी पीआईपी श्रीमती नानू भसीन मुख्य अतिथि रहे।

तीन दिनों में मंचित हुए 12 नाटकों ने दर्शकों को बच्चों की रचनात्मक क्षमता, अभिनय कौशल और सामाजिक समझ से परिचित कराया। ग्रीष्मकालीन रंगमंच कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों को प्रशिक्षण देकर तैयार की गई इन प्रस्तुतियों में मंच पर बच्चों का आत्मविश्वास, उच्चारण, शारीरिक भाषा और भाव-प्रदर्शन देखकर दर्शक आश्चर्यचकित रह गए। समारोह में मंचित नाटकों ₹राजा मिडास₹ और ₹जादुई पतंग₹ का निर्देशन संयोगिता शर्मा एवं आशु भाटेजा ने किया जबकि बच्चों की कचहरी₹ और "लिटिल विमेन" का निर्देशन अभिषेक राणा ने किया। नाटक "संमस्यापुर" का निर्देशन शिवांग मिश्रा व आस्था बावेजा ने किया जबकि "जंगल बुक" और "एनिमल फार्म" का निर्देशन कन्या सिंह ने किया। इसके अलावा नाटक "अंधेर नगरी" और "वीरगाथा" का निर्देशन खुशबू बराइक ने तथा "द मैजिकल बस" – निर्देशनः संवल सहगल एवं चारु सिंह ने किया।

समारोह का प्रमुख आकर्षण झुग्गियों में निवास करने वाले बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक पुण्यश्लोक अहिल्याबाई" का मंचन रहा जिसका निर्देशन योगेश पंवार ने किया। समाज के वंचित वर्ग से आने वाले इन बच्चों ने जिस आत्मविश्वास और संजीदगी से ऐतिहासिक पात्रों को जीवंत किया, वह दर्शकों के लिए बेहद प्रेरणादायक रहा। दर्शकों ने खड़े होकर तालियों से उनका अभिनंदन किया। यह समारोह इन बच्चों के लिए न केवल आत्म-विश्वास बढ़ाने का माध्यम बना, बल्कि उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का सशक्त ज़रिया भी साबित हुआ। समापन अवसर पर सभी बच्चों को प्रतिभाग प्रमाणपत्र दिए व ट्राफी भेंट कर सम्मानित किया गया। अंत में समारोह के आयोजक व दिशा निर्देशक संजय टुटेजा ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए सभी दर्शकों व अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

75 साल: राजनीतिक रूप से आज़ाद लेकिन क्या आर्थिक रूप से अब भी पराधीन!

पंकज जायसवाल

हम भले ही अपने आपको सुपर पावर बोलें लेकिन सच्चाई है कि अभी भी हमारे बाजार में विदेशी कंपनियां ही राज कर रहीं हैं. हर चीज हर संस्थाओं और बिजनेस पर उनका एकाधिकार सा हो गया है. पश्चिम कई मॉडल से दुनिया के बाजार को नियंत्रित करते हैं. वह एसोसिएशन और फोरम बनाते हैं और उसके मार्फ़त दुनिया के बिजनेस को नियंत्रित करते हैं. आज फ़ूड मार्किट देख लीजिये. चाहे वह भारत या अन्य देश हों, वहां आपको मक्डोनाल्ड, केएफसी, सबवे, बर्गर किंग, पिज़्ज़ाहट, डोमिनो, पापा जॉन, बर्गर किंग, डंकिन डोनट्स, हार्ड रॉक कैफ़े, कैफ़े अमेज़न, वेंडिज, टैको बेल, चिलीज़, नंदोस कोस्टा कॉफी या स्टार बक्स हों, यही छाये हुए मिलेंगे. ये सब विदेशी ब्रांड हैं. आप भारतीय शहरों के किसी भी मॉल या मार्किट में जाइये. भारतीय फर्मों को इनसे छूटा हुआ बाजार ही मिलता है और तकनीक के बल पर इनका ही एकाधिकार है. स्टार बक्स के आने के बाद भारत के शहरों में कॉफ़ी के होम ग्रोन ब्रांड या चाय के कट्टे पर भीड़ कम होती गई.

भारतीय बाजार में फ़ूड आइटम को देख लीजिये, क्या हम कोल्ड ड्रिंक में पेप्सी, कोक रेड बुल के इतर किसी ब्रांड को देख पाते हैं ? फ़ूड एवं FMCG में देख लीजिये, नेस्ले, हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, प्रॉक्टर एंड गैम्बल एवं कोलगेट का कब्ज़ा है. इनके प्रोडक्ट लाइफबॉय, लक्स , मैग्गी, लेचिप्स, नेस्कैफे, सनसिल्क, नोर सूप ये सब इनके ही ब्रांड हैं. इनके आगे इंडियन ब्रांड को उड़ान भरने में बहुत ही मशक्कत करनी पड़ती है. इनके पूंजी और तकनीक के एकाधिकार के कारण भारतीय कंपनियों को लेवल प्लेइंग फील्ड मिल नहीं पाता है.

एडवाइजरी एवं ऑडिट के क्षेत्र में एर्न्स्ट एवं यंग, केपीएमजी, प्राइस वाटरहाउस, डेलॉइट, बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप, मेकेंजी, बेन एंड कंपनी, एटी कर्णी, ग्रांट थॉर्टन, बीडीओ, प्रोटीवीटी, जेपी मॉर्गन, मॉर्गन स्टैनले, आर्थर एंडर्सन, एक्सेंचर का लगभग कब्ज़ा है. इन कंसल्टिंग फर्मों में से तो कई सरकारों के कामकाज में अंदर तक घुसी हुईं हैं.

कंप्यूटर की दुनिया ले लीजिये. क्या आप आईटी मार्किट में IBM, माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल, इंटेल, डेल, एचपी, सिस्को, लेनोवो के बिना कंप्यूटर की कल्पना कर सकते हैं ? आईटी क्षेत्र को लीजिये क्या Adobe Systems, SAP और Oracle को ERP को क्या भारतीय कंपनियां आसानी से बीट कर पा रहीं हैं ? आईटी में IBM, कैपजेमिनी, एक्सेंचर, डेलॉइट का ही दखल प्रभावी है. AI देखिये चैटजीपीटी की ही लीड है.

इंटरनेट देख लीजिये किसका एकाधिकार है ? सोशल मीडिया देख लीजिये हम अपने जीवन का सर्वाधिक समय व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर देते हैं और सर्वाधिक चलने वाले जिस जीमेल अकाउंट, गूगल, अमेज़न या एज्युर क्लाउड का उपयोग करते हैं, सब विदेशी हैं.

इंजीनियरिंग या इलेक्ट्रॉनिक में देख लीजिये सीमेंस, GE, फिलिप्स, LG, ABB, सैमसंग, सोनी, फॉक्सवागन, हौंडा, ह्यूंदै, किआ, सुजुकी, टोयोटा, निसान, BMW, मर्सिडीज़, पॉर्श, रीनॉल्ट, Sony, Honda, Suzuki, Panasonic, Hitachi, Mitsubishi, Toshiba, ओप्पो, वीवो, वोडाफोन, and Canon, ये सब बाहरी हैं.

भारत में एयरपोर्ट को ही देख लीजिये. जिसके पास एयरपोर्ट का पूरा का पूरा ब्लू प्रिंट होता है. वह कौन है, सेलेबी टर्की की कंपनी, सेट्स सिंगापुर की कंपनी, इंडो थाई में थाई एयरपोर्ट ग्राउंड सर्विसेज पार्टनर, WFS भी विदेशी कंपनी है, NAS एयरपोर्ट केन्या की कंपनी है. जहाज जिनके हम चलाते हैं वह एयर बस या बोइंग या बॉम्बार्डियर सब विदेशी कम्पनी ही है.

इनके कल पुर्जे बनाने वाली कंपनी भी ज्यादातर विदेशी हैं. पूरे दुनिया के एविएशन को जो रेगुलेट करते हैं वह कौन है IATA, ICAO वह कहां की है उसकी स्थापना कहां हुई थी. क्या इनके एफ्लीएशन के बिना कोई एविएशन बिजनेस में घुस सकता है ?

गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम, माइक्रोन, एडोब, यूट्यूब, हनीवेल, नोवार्टिस, स्टारबक्स और पेप्सिको जैसी कई वैश्विक कंपनियों में भारतीय मूल के लोग सीईओ हैं लेकिन ये सभी अब भारतीय नागरिक नहीं बल्कि अब ये उन देशों के नागरिक हैं जहाँ वे काम करते हैं और रहते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि किसी द्विपक्षीय युद्ध की स्थिति में, एक नागरिक के रूप में उनकी निष्ठा किसके प्रति होगी ,उस देश के प्रति, जिसकी नागरिकता उन्होंने ली है, या भारत के प्रति, जहाँ उनकी जड़ें हैं ? यह एक यक्ष प्रश्न है।

भारत के मामले में स्थिति उलटी है। यहां कई कंपनियां हैं जो राष्ट्रीय सुरक्षा या युद्धकालीन परिस्थितियों में भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं लेकिन उनके सीईओ न तो भारतीय मूल के हैं और न ही भारतीय नागरिक। ऐसे में वही सवाल खड़ा होता है द्विपक्षीय युद्ध की स्थिति में उनकी निष्ठा किसके प्रति होगी ? उस देश के प्रति, जिसके वो आज भी नागरिक हैं, या भारत के प्रति, जहाँ वे कार्यरत हैं ?

हैवी मशीनरी में यूरोप का अधिकार है. जो हैवी मशीनरी इंडिया में कुछ लाख या कुछ करोड़ में बन सकती है, विशेषता के हिसाब से उसी मशीनरी को ग्लोबल कार्टेल, एसोसिएशन जैसे मंचो का इस्तेमाल कर और ग्लोबल पेटेंट लेकर वह हमें कई गुना मूल्यों पर बेच रहे हैं. जिन हैवी मशीनों को भारतीय कंपनियां 1 से 2 करोड़ में बना सकती हैं उसे यूरोप की कंपनियां कई करोड़ में भारतीय कंपनियों को बेच रही हैं. इनके जर्मनी या फ्रांस में होने वाले कांफ्रेंस में चले जाइये. आपको इनके एकाधिकार का पता चल जायेगा.

बैंकिंग और रेटिंग कंपनी में क्रिसिल, सिबिल, सिटी बैंक, HSBC बैंक, डोएचे बैंक सब विदेशी हैं. भारत में किसको लोन मिलना चाहिए, किसको नहीं मिलना चाहिए, इतने बड़े प्रश्न का क्रेडिट रेटिंग के रूप में निर्धारण करने वाली कम्पनी जो हर आम ख़ास भारतीयों के लोन का निर्धारण करती है Transunion CIBIL में अमेरिकन कंपनी Transunion की मॉरिशस रुट के द्वारा बहुमत हिस्सेदारी है मतलब एक अमेरिकी कंपनी निर्धारण कर रही है कि भारत में किसको लोन मिलना चाहिए. ऐसा इकोसिस्टम बनाया है कि भारत की लगभग सभी वित्तीय संस्थान, बैंक या NBFC बिना सिबिल स्कोर के लोन ही नहीं दे सकते. एक तरह से भारत के करोड़ों भारतीयों के क्रेडिट रिपोर्ट के डेटा का प्रभावी रूप से मालिक आज एक अमेरिकी कंपनी है. विदेशी कंपनी सिबिल का इतने माइक्रो लेवल पर कब्ज़ा है कि मजदूर से लेकर मध्य वर्ग को लोन मिलेगा कि नहीं, यह उसके रिपोर्ट पर निर्भर करता है.

भारत को अभी इस क्षेत्र में मीलों सफर तय करना है जब देश के बाहर विदेशों में भी भारतीय ब्रांड छाये रहें, जैसे अभी विदेशी ब्रांड भारत और दुनिया के देशों में कब्ज़ा जमाये हैं. अभी ऐसे बहुत से लिस्ट हैं. यहां तो उसी का उल्लेख किया गया है जो पॉपुलर हैं. यह ध्यानाकर्षण इसलिए कि सरकार को और नियामकों को इस विषय पर चिंतन करना चाहिए और भारत फर्स्ट को ध्यान में रखते हुए ऐसे बजट को ऐसे बनाना चाहिए कि वह भारतीय कंपनियों को पॉपुलर ग्लोबल ब्रांड बनने का मार्ग प्रशस्त करे.

एक राष्ट्र के रूप में हमें यह मानसिकता अपनानी चाहिए कि हम अपने देशी ब्रांडों की सराहना करें और उनका समर्थन करें, चाहे वह जियो, रिलायंस, अदानी , टाटा , बिड़ला , पतंजलि , सीसीडी , सहारा या किंगफिशर हो। इन उद्यमों ने संस्थाएं खड़ी की हैं, बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित किया है और हमारी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जब सरकार, बैंक या कोई नियामक संस्था कोई कार्रवाई करें तो उन्हें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि ऐसे संगठनों का अस्तित्व और निरंतरता सुरक्षित रहे। आखिरकार, ये व्यवसाय केवल उनके प्रवर्तकों का नहीं हैं बल्कि उन लाखों कर्मचारियों, उनके परिवारों के भविष्य और उन बच्चों की शिक्षा के बारे में भी हैं जो इनसे जुड़ें हैं और पोषित हैं। ये कंपनियां करों का भुगतान कर राष्ट्र को ईंधन भी देती हैं जिससे जनकल्याण और विकास संभव होता है।

जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान लाउडस्पीकर को लेकर कानपुर में हंगामा: धरने पर बैठे समर्थक

सुनील बाजपेई

कानपुर। शुक्रवार को जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान लाउडस्पीकर लगाने को लेकर हंगामा हो गया। इस बीच पुलिस और पनकी हनुमान मंदिर के महंत के बीच जमकर विवाद भी हुआ। जिसके बाद सैकड़ों समर्थक बहुत सारी नाका के इंस्पेक्टर को सस्पेंड करने की मांग को लेकर नयागंज पीपल वाली कोठी पर धरने पर बैठ गए, जिसमें समाजवादी पार्टी के विधायक अमिताभ बाजपेई भी शामिल हुए।

रथ यात्रा के दौरान माहौल तब गरमा गया जब लाउडस्पीकर लगाने की बात आई ,जिस पर पुलिस प्रशासन का कहना था कि रथयात्रा में लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध है। इसके बाद समर्थकों ने पुलिस मुर्दाबाद के नारे लगाए। सूचना मिलने पर पुलिस के अधिकारी मौके पर समर्थकों को समझाने पहुंचे। यहां सपा विधायक अमिताभ बाजपेयी भी समर्थकों के साथ पहुंचे हैं।

जानकारी के मुताबिक रथयात्रा निकलने से पहले पुलिस अधिकारी मंदिर के महंत जितेंद्र दास और कृष्ण दास के पास पहुंचे और बैंड में दो स्पीकर लगाने को कहा। जिसका उन्होंने विरोध किया। महंत का आरोप है कि इस दौरान पुलिसकर्मियों ने बदसलूकी की।

इस बीच वहां पर के कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्रीय संयोजक विनोद गुप्ता भी पहुंचे। उन्होंने कहा- हम क्या पाकिस्तान में रथ यात्रा निकलेगी। मंदिर से जुड़े 40 मंडल है, जो 210 सालों से यात्रा निकाल रहे हैं, सभी पुलिस के कृत्य के विरोध में हैं। अगर जल्द नाका इंस्पेक्टर को सस्पेंड नहीं किया गया, तो बाजार बंद किया जाएगा।

अवगत कराते चलें कि 215 साल पुराने इतिहास वाली यहां की जगन्नाथ रथयात्रा दोपहर ढाई बजे जरनलगंज स्थित जगन्नाथ गली से यात्रा निकली गई।

इस तरह से दो दिन चलने वाली यात्रा आज 28 जून को काहूकोठी, नयागंज चौराहा, हूलागंज, भूसाटोली, नागेश्वर मंदिर, नयागंज चौराहा, मनीराम बगिया, मेस्टन रोड, चौक सर्राफा, कोतवाली चौराहा, शिवाला, संगम लाल मंदिर, कमला टावर, लाठी मोहाल होकर जनरलगंज स्थित जगन्नाथ मंदिर पर खत्म होगी।

सत्येंद्र यादव (समाजसेवी) ने चौहान गेस्ट हाउस में बनी लक्ष्य डिजिटल लाइब्रेरी का फीता काट कर उद्घाटन किया

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर: जनपद बदायूं में सत्येंद्र यादव (समाजसेवी) ने शुक्रवार को थाना कस्बा बिनावर में बरेली बदायूं हाईवे मार्ग से निकट हनुमान मंदिर के सामने चौहान गेस्ट हाउस में बनी लक्ष्य डिजिटल लाइब्रेरी का फीता काट कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर सत्येंद्र यादव सहित दर्जनों कस्बा वासियों ने लक्ष्य डिजिटल लाइब्रेरी के संचालक सौरभ यादव के इस कार्य की काफी सराहना करते हुए कहा कि इस कस्बा बिनावर के आस-पास के गांवों के छात्र-छात्राओं को भी इस लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ने का शुभ अवसर मिलेगा। यह एक अच्छा और सार्थक प्रयास है। वातानुकूलित लाइब्रेरी में एक साथ ग्रामीण इलाके के छात्र - छात्राएं बैठकर पढ़ाई कर सकते हैं। इस अवसर पर संचालक सौरभ यादव ने बताया कि जो भी छात्र-छात्राएं 30 जून तक लक्ष्य डिजिटल लाइब्रेरी में रजिस्ट्रेशन कराते हैं तो उन्हें शुरुआत में निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क में 20% की छूट भी दी जाएगी। इस मौके पर कार्यक्रम में अशोक चौहान, सर्वेश यादव इफको अध्यक्ष, जवाहरलाल उपाध्याय प्रधान, मिस्टर सिंह यादव, सत्येंद्र यादव, गौरव यादव, प्रवेन्द्र यादव, शिवा यादव, आदित्य यादव, ग्राम विकास अधिकारी सुगम कुमार, रतिभान सिंह प्रधान, मास्टर उपेन्द्र यादव, टिंकू यादव, श्याम वीर यादव, जेपी मौर्य, कुलदीप चौहान सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

नेशनल स्पीड स्केटिंग में आव्या ने जीता कांस्य पदक छत्तीसगढ़ अग्रवाल समाज का गौरव आव्या

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर,छत्तीसगढ़। कोलकाता के गोल पार्क रविंद्र सरोवर लेक में आयोजित 9वी रैंकिंग ओपन नेशनल स्पीड स्केटिंग चैंपियनशिप में एसईसी रेलवे नं 02 की कक्षा 1 की छात्रा आव्या अग्रवाल ने अपनी बेहतरीन फॉर्म बरकरार रखते हुए कांस्य पदक पर कब्ज़ा जमाया। इससे पूर्व बिलासपुर में रतनपुर रोड में प्रदेश में पहली बार आयोजित राज्य स्तरीय स्पीड रोड स्केटिंग रैंकिंग चैंपियनशिप में आव्या अग्रवाल ने 2 रजत पदक हासिल कर छत्तीसगढ़ अग्रवाल समाज एवं परिवार का नाम रौशन किया। आव्या एस.ई.सी.रेलवे नं. 02, बिलासपुर के कक्षा 1 की छात्रा आव्या की इस सफलता का हैं। उनके परिजन फ्युजन स्केटिंग क्लब बिलासपुर के कोच ए. फ्रैंकलिन एवं शीरिन मैम को देते हैं और प्रतिभाशाली बिटिया आव्या अग्रवाल के उज्वल भविष्य की कामना करते हैं। अंकुश और गीतांजलि अग्रवाल की बिटिया आव्या अग्रवाल साइंस कॉलेज मैदान में रोज सुबह शाम फ्यूजन स्केटिंग कल में पारंगत हो रही हैं।

शंघाई सहयोग संगठन रक्षा मंत्रियों की 22वीं बैठक 25-27 जून 2025 किंगदाओ चीन में कुछ देशों की जुगलबंदी को भारत का वीटो पावर भारी पड़ा-साझा घोषणा पत्र अटका

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कुछ देशों द्वारा जुगलबंदी कर भारतीय विचारधारा को नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है-भारत की आवाज़ सुनना पड़ेगा

आतंकवाद से मुकाबला करने सर्वेजन सुखिनो भवन्तु :यानें शांति और समृद्धि के लिए सभी को एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना होगा,सराहनीय- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत के बढ़ते कद,रुतबे और प्रतिष्ठा से स्वाभाविक रूप से कुछ देश या उनका संगठन ईर्ष्या ज़रूर करेगें। 1984 में विंग कमांडर राकेश शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में कदम रखा था अभी 26 जून 2025 को शुभांशु शुक्ला ने भी भारत के दूसरे बहादुर ने कदम रखा है यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि और भारत की दिशा, विचारधारा को नज़रंदास कर उसे कम आकलन कर अपने सहयोगी सदस्य देश का पक्ष जरूर लेंगे। वैसे भी यह हर देश की नीति रणनीति रहती है कि उसके लिए राष्ट्रहित सर्वोत्तम रहता है।दुनियाँ का बादशाह कहलानें वाला देश भी अनेक बार अपने हित के लिए पड़ोसी व विस्तारवादी मुल्क, खाड़ी देशों, पश्चिम एशिया इत्यादि में अपनें सहयोग के साथ की स्थिति बदलते रहता है, ठीक उसी तरह भारत भी कूटनीतिक, विदेश नीति के हिसाब से राष्ट्रीय हित सर्वोपरि रखकर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनीं विचारधारा, संकल्प, देशहित, विश्वहित की अपनी नीति शुरू से ही जारी रखे हुए हैं। आज मैं किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र, इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहा हूं क्योंकि हमने 26 जून 2025 को चीन के किंगदाओ शहर में चल रहे रक्षा मंत्रियों के शंघाई सहयोग संगठन में साझा घोषणापत्र पर भारतनें हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है, क्योंकि उनकाआतंकवाद पर पाक़ के बलूचिस्तान का तो नाम था परंतु भारत के पहलगाम का नाम नहीं था,जिस पर हमारे रक्षामंत्री ने भरी सभा में खरीखोटी सुनाई व अनेक बातें कहीं जिसे हम नीचे पैराग्राफ में चर्चा करेंगे,ठीक उसी तरह अभी 3 दिन पहले,तुर्किए के इस्तांबुल में आयोजित इस्लामिक सहयोग संगठन की दो दिवसीय बैठक एक बार फिर पाक की पक्षपातपूर्ण कूटनीति का मंच बन गई।57 मुस्लिम देशों के संगठन ओआईसी की विदेश मंत्रियों की परिषद ने अपने साझा बयान में जहां एक ओर भारत-पाक के बीच हुए सिंधु जल समझौतेको जारी रखने की बात कही, वहीं दूसरी ओर भारत की सैन्य कार्रवाई और कश्मीर नीति को लेकर भी एकतरफा टिप्पणी की,ओआईसी ने अपने साझा बयान में साफ कर दिया कि वह पाक के रुख का पूरी तरह समर्थन करता है और भारत से अधिकतम संयम बरतने की उम्मीद करता है।चूँकिआतंकवाद से मुकाबला सर्वेजन सुखीनों भवंतु यानें शांति और समृद्धि के लिए सभी को एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना होगा सराहनीय है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कुछ देशों द्वारा जुगलबंदी कर भारतीय विचारधारा को नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है,भारत की आवाज हर हाल में सुना ही पड़ेगा।

साथियों बात अगर हम 25-27 जून 2025 तक किंगदाओ चीन में चले शंघाई सहयोग संगठन की 22वीं बैठक में साझा घोषणा पत्र में हस्ताक्षर करने से इंकार की करें तो,एससीओ वर्तमान में 10 सदस्य देश हैं - बेलारूस, चीन, भारत, ईरान, कजाकिस्तान किर्गिस्तान,पाकिस्तान,रूस, ताजिकिस्तान औरउज्बेकिस्तान। बैठक के बाद साझा घोषणापत्र में

चीन नें पाकिस्तान से दोस्ती निभा दी है, चीन ने एससीओ घोषणापत्र में पहलगाम आतंकी हमले का जिक्र भारत के आग्रह के बावजूदन नहीं किया, जबकि पाकिस्तानी सेना के खिलाफ बलूचिस्तान में हो रहे विद्रोह का जिक्र आतंकी घटनाओं के तौर पर किया है, इस बैठक में भाग लेने के लिए चीन गए रक्षा मंत्री इससे नाराज हो गए हैं और उन्होंने इस साझा घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया है, साथ ही भारत ने कहा है कि वे साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी शामिल नहींहोंगे। भारत के इस कदम के बाद एससीओ का साझा घोषणापत्र जारी नहीं हो सका है।भारत ने आतंकवाद के मुद्दे पर एससीओ बैठक में भी वही रुख कायम रखा है, जो पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाक में आतंकी ठिकानों पर ऑपरेशन सिंदूर के तहत कार्रवाई में दिखाया था, भारत ने दिखा दिया है कि आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई के मुद्दे पर वह किसी तरह की कूटनीतिक नरमी नहीं दिखाने जा रहा है और ना ही किसी तरह के अंतरराष्ट्रीय दबाव में आएगा, भारत ने इस मुद्दे पर एससीओ घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने के चीन के आग्रह को भी खारिज करके स्पष्ट कर दिया है कि आतंकवाद पर उसका दोहरा रवैया नहीं चलेगा।

साथियों बात अगर हम रक्षा मंत्री की एससीओ बैठक में सीमा पर आतंकवाद का मुद्दा उठाने की करें तो रक्षामंत्री ने बुधवार को शुरू हुई एससीओ देशों के 10 रक्षामंत्रियों की बैठक में स्पष्ट रूप से सीमापार आतंकवाद का मुद्दा उठाया था, उन्होंने पाक का नाम लिए बिना ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए सीधी चेतावनी दी थी कि निर्दोषों का खून यदि फिर बहेगा तो भारत का एक्शन जारी रहेगा, भारत फिर से घुसकर आतंकियों को मारेगा, निर्दोषों का खून बहाने वालों को छोड़ा नहीं जाएगा, उन्होंने पहलगाम आतंकी हमले का भी जिक्र किया था और कहा था कि एक नेपाली नागरिक समेत 26 निर्दोषों का खून धार्मिक पहचान पूछकर बहाया गया, जिस संगठन रेजिस्टेंस फ्रंट ने इसकी जिम्मेदारी ली, वो संयुक्त राष्ट्र की तरफ से लिस्टेड पाक आतंकी संगठन लश्कर-ए -ताइबा का प्रॉक्सी संगठन है।उन्होंने चीन को भी ताकीद की थी, उन्होंने कहा था कि कोई भी देश कितना भी शक्तिशाली हो, अकेला काम नहीं कर सकता है, हमारे यहां सदियों से सर्वे जन सुखिनो भवन्तु की कहावत है, जिसका मतलब है कि शांति और समृद्धि के लिए सभी को एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करना पड़ता है। उन्होंने कहा था कि हमारे क्षेत्र में सभी समस्याओं का मूल कारण कट्टरपंथ और आतंकवाद है, आतंकवाद और शांति-समृद्धि साथ-साथ नहीं चल सकते, आतंकवाद को नीतिगत हथियार बनाने वाले और आतंकियों को पनाह देने वाले देशों को दोहरे मानदंड के लिए यहां जगह नहीं है। एससीओ को ऐसा करने वाले देश की आलोचना में संकोच नहीं करना चाहिए, हालांकि भारत के इस आग्रह के बावजूद चीन ने एससीओ का साझा घोषणापत्र तैयार करते समय पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद का उसमें जिक्र नहीं किया है, जो उसके दोहरे मानदंड दिखाता है।एससीओ रक्षा मंत्रियों की बैठक में रक्षामंत्री ने कहा कि हमें सीमा पार से हथियारों और ड्रग्स की तस्करी के लिए ड्रोन सहित आतंकवादियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक का मुकाबला करने की कोशिश करनी चाहिए। हमारी परस्पर जुड़ी दुनिया में पारंपरिक सीमाएं अब खतरों के खिलाफ एकमात्र बाधा नहीं हैं। इसके बजाय हम चुनौतियों के एक जटिल जाल का सामना कर रहे हैं, जो अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद और साइबर हमलों से लेकर हाइब्रिड युद्ध तक फैले हुए हैं। भारत आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों से लड़ने के अपने संकल्प पर कायम है।'उन्होंने कहा कि आतंकवाद के लिए भारत की शून्य सहिष्णुता आज उसके काम से प्रकट होती है। इसमें आतंकवाद के खिलाफ खुद का बचाव करने का हमारा अधिकार भी शामिल है। हमने दिखाया है कि आतंकवाद के केंद्र अब सुरक्षित नहीं हैं और हम उन्हें निशाना बनाने में संकोच नहीं करेंगे। हमें अपने युवाओं में कट्टरपंथ के प्रसार को रोकने के लिए भी सक्रिय कदम उठाने चाहिए।एससीओ के आरएटीएस तंत्र ने इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद को बढ़ावा देने वाले कट्टरपंथ का मुकाबला करने पर एससीओ राष्ट्राध्यक्षों की परिषद का संयुक्त वक्तव्य भारत की अध्यक्षता हमारी साझा प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि शंघाई सहयोग संगठन रक्षा मंत्रियों की 22वीं बैठक 25- 27 जून 2025 किंगदाओ चीन में कुछ देशों की जुगलबंदी को भारत का वीटो पावर भारी पड़ा-साझा घोषणा पत्र अटका अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कुछ देशों द्वारा जुगलबंदी कर भारतीय विचारधारा को नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है-भारत की आवाज़ सुनना पड़ेगा।आतंकवाद से मुकाबला करने सर्वेजन सुखिनो भवन्तुः यानें शांति और समृद्धि के लिए सभी को एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना होगा,सराहनीय।

आ गया बारिश का मौसम; सड़कों पर जहां भरा हो पानी, वहां इन 10 तरीकों से कार रखें सेफ

परिवहन विशेष न्यूज

मानसून में ड्राइविंग टिप्स बारिश के मौसम में सड़कों पर जलभराव एक आम समस्या है। ऐसी स्थिति में सुरक्षित ड्राइविंग के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझावों का पालन करना आवश्यक है। जलभराव वाले क्षेत्रों से बचें अपनी गाड़ी की जल प्रवेश क्षमता जानें और एक समान गति बनाए रखें। AC बंद रखें और जरूरत पड़ने पर हैज़र्ड लाइट का उपयोग करें।

नई दिल्ली। भारत के कई राज्यों में बारिश ने दस्तक दे दी है। वहीं, बहुत से राज्यों में इतनी ज्यादा बारिश हुई है कि वहां की सड़कों पर लबालब पानी भरा हुआ है। सड़कों पर पानी इतना ज्यादा भरा हुआ है कि वहां से गाड़ियों का आना-जाना भी मुश्किल हो गया है। वहीं, ऐसी जगहों पर कार ड्राइव करने पर गाड़ी में बड़ा नुकसान हो सकता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कुछ ऐसे जरूरी टिप्स बता रहे हैं, जिन्हें आपको बारिश के मौसम में सेफ ड्राइव करने के लिए मदद करेगा।

1. जलभराव वाली सड़कों से दूरी बनाएं

अगर आपको सड़क का कोई हिस्सा पानी में डूबा हुआ दिखाई दें, तो उसकी जगह पर आपको दूसरा रास्ता चुनना चाहिए। दरअसल गहरे पानी से इंजन हाइड्रोस्टेटिक लॉक हो सकता है, जिसे ठीक करवाने में आपको मोटा पैसा खर्च हो सकता है।

2. कितनी गहराई तक जा सकती है

आपको यह जानना जरूरी है कि आपकी गाड़ी कितनी गहराई तक के पानी में जा सकती है। हैचबैक और सेडान सेगमेंट की गाड़ियां 300 मिमी के आसपास तक गहराई में जा सकती है और SUV सेगमेंट की गाड़ियां 500-600 मिमी तक की गहराई तक जा सकती है।

3. एक ही स्पीड पर चलाएं कार

अगर आपको पानी से भरी सड़क को पार करना ही पड़ रहा है, तो कार की स्पीड एक ही रखें। इसे पहले गियर में रखें और धीमी गति से उसे पार करें। इस दौरान इंजन पर जोर एक बराबर ही दें। अचानक ब्रेक लगाने या स्पीड बढ़ाने से बचें। इससे इंजन में पानी जा सकता है।

4. AC बंद कर दें

जलभराव वाली सड़क को पार करने के दौरान एसी बंद करने से इंजन पर लोड कम पड़ता है। इसके सात ही कार में फॉग बनने से रोकने के लिए कार की खिड़कियों को थोड़ा खुला करके रखें।

5. पानी से डूबे इंजन को चालू न करें

अगर आपकी कार पानी में डूब जाती है, तो फिर उसे चालू करने की कोशिश नहीं करें। पानी से भरे इंजन को चालू करने से उसके पार्ट्स खराब हो सकते हैं।

6. हैजर्ड लाइट और फॉग लैंप इस्तेमाल करें

भारी बारिश के दौरान या फिर पानी से भरी सड़कों पर कार ड्राइविंग के दौरान हैजर्ड लाइट और फॉग लैंप का इस्तेमाल करें। दरअसल, ऐसी जगहों पर दृश्यता काफी कम हो सकती है।

7. पानी से निकलने के बाद कार के ब्रेक सुखाएं

जलभराव वाली सड़क को कार के पार करने के बाद उसके ब्रेक को जरूर सुखाएं। इससे ब्रेकिंग कैपेसिटी पहले की तरह बनी रहती है।

8. टायरों में एयर प्रेशर सही रखें

कम एयर प्रेशर वाले टायर एक्वाप्लेनिंग के जोखिम को बढ़ा देते हैं। कम हवा होने की वजह से गीली सतहों पर पकड़ और कंट्रोल खो देती है।

9. मानसून-प्रूफ एक्सेसरीज लें

कार के इंटीरियर को नमी से बचाने के लिए रबर फ्लोर मैट, वाटरप्रूफ कार सीट कवर और डोर वाइजर का इस्तेमाल करें। अगर आप कार को खुले में पार्क करते हैं, तो उसे कवर से जरूर ढंके।

10. इलेक्ट्रिकल सिस्टम की सर्विस करवाएं

कार में नमी के वजह से इसके इलेक्ट्रिकल सिस्टम में समस्याएं आ सकती है। इसलिए आपको बारिश का मौसम आने से पहले बैटरी, वायरिंग, फ्यूज और लाइट्स को एक बार चेक करवा लें कि वह सही से काम कर रहे हैं कि नहीं। आप कार के अंडरबॉडी प्रोटेक्शन के लिए एंटी-रस्ट कोटिंग भी करवा सकते हैं।

2025 सुजुकी वी-स्ट्रॉम भारत में लॉन्च, नया कलर समेत मिले बेहतरीन फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

सुजुकी मोटरसाइकिल ने भारत में अपनी लोकप्रिय एडवेंचर टूरर बाइक 2025 Suzuki V-Strom 800DE को लॉन्च किया है। यह नवीनतम OBD-2B उत्सर्जन मानकों के अनुरूप है। इंजन अपडेट के साथ इसमें नए रंग और फीचर्स भी हैं। 776cc का पैरेलल-ट्विन इंजन स्मूथ राइडिंग सुनिश्चित करता है। इसमें तीन राइडिंग मोड्स और ग्रेवल मोड भी है। इसकी कीमत 1030000 रुपये (एक्स-शोरूम) है।

नई दिल्ली। सुजुकी मोटरसाइकिल मे अपनी पॉपुलर एडवेंचर टूरर बाइक 2025 Suzuki V-Strom 800DE को भारत में लॉन्च कर दिया है। इसका इंजन अब नवीनतम OBD-2B उत्सर्जन के अनुरूप हो गया है। इसके इंजन को अपडेट मिलने के साथ ही इसे नया कलर और फीचर्स भी दिए गए हैं। इसे नए अपडेट मिलने के बाद यह पहले से ज्यादा बेहतरीन हो गई है। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं।

2025 Suzuki V-Strom के नए कलर ऑप्शन

इसे तीन नए शानदार कलर ऑप्शन दिए गए हैं, जो पहले से ज्यादा अट्रैक्टिव दिखाई देते हैं। इसे पर्ल टेक व्हाइट, चैंपियन येलो नंबर 2 और ग्लास स्पार्कल ब्लैक कलर के साथ अपडेट किया गया है।

2025 Suzuki V-Strom का इंजन

इसमें 776 cc पैरेलल-ट्विन DOHC इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसमें दिया गया 270-डिग्री क्रैंकशाफ्ट डिजाइन स्मूथ राइड देता है। इसका इंजन अब OBD-2B उत्सर्जन के अनुरूप हो गया है, जिसकी वजह से यह अब पर्यावरण के अनुरूप हो गई है।

2025 Suzuki V-Strom का हैंडलिंग और सस्पेंशन

V-Strom 800DE को एक कठोर स्टील फ्रेम पर तैयार किया गया है। इससे बाइक चलाने के दौरान बेहतरीन हैंडलिंग मिलती है। इसमें लंबा व्हीलबेस, ऊंची ग्राउंड क्लीयरेंस और चौड़ा हैंडलबार दिया गया है। इसके सस्पेंशन की बात करें, तो इसमें इसमें Hitachi Astemo (SHOWA) इनवर्टेड फ्रंट फोर्क और Hitachi Astemo (SHOWA) मोनो-शॉक रियर सस्पेंशन दिया गया है। इसे हाथ से एडजस्ट की जा सकने वाली स्प्रिंग प्रीलोड की सुविधा है। इसमें 21-इंच का एल्यूमीनियम फ्रंट रिम, वायर-स्पोक व्हील्स और डनलप ट्रेडमैक्स मिक्सटूर एडवेंचर टायर दिए गए हैं। लंबी दूरी के सफर के लिए इसमें 20-लीटर का फ्यूल टैंक भी दिया गया है।

2025 Suzuki V-Strom के फीचर्स

V-Strom 800DE कई इलेक्ट्रॉनिक राइडर एड्स के साथ आती है, जो राइडिंग एक्सपीरिएंस को आरामदायक बनाते हैं। इसमें इसमें तीन अलग-अलग राइडिंग मोड्स दिए गए हैं। इसमें इसमें एक खास 'ग्रेवल मोड' भी शामिल है। यह राइड-बाई-वायर इलेक्ट्रॉनिक थ्रोटल दिया गया है। बी-डाइरेक्शनल क्विक शिफ्ट सिस्टम, ABS, लो RPM असिस्ट, इजी स्टार्ट सिस्टम जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

2025 Suzuki V-Strom की कीमत

अपडेटेड Suzuki V-Strom 800DE को भारत में 10,30,000 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसे आप Suzuki के बिग बाइक डीलरशिप के जरिए खरीद सकते हैं।

अभिनेता अजित कुमार ने खरीदी मैक्लेरेन सेन्ना हाइपरकार, क्या है इस कार में खास?

परिवहन विशेष न्यूज

तमिल सुपरस्टार अजित कुमार ने हाल ही में McLaren Senna हाइपरकार खरीदी है जिससे उनका कार कलेक्शन और भी शानदार हो गया है। यह कार F1 ड्राइवर Ayrton Senna को समर्पित है जो कई ड्राइवरों के आदर्श हैं। अजित कुमार जो खुद भी एक रेसकार ड्राइवर हैं के लिए यह कार एक खास तोहफा है क्योंकि Senna उनके भी आदर्श हैं।

नई दिल्ली। तमिल फिल्मों के सुपरस्टार और रेसिंग के शौकीन एक्टर अजित कुमार (Ajith Kumar) ने McLaren Senna हाइपरकार को खरीदा है। इस कार को खरीदने के बाद अजित कुमार का कार कलेक्शन और भी बेहतरीन हो गया है। इस कार कार लीजेंड F1 ड्राइवर Ayrton Senna के नाम पर रखा गया है। हाल के समय में Senna हर F1 ड्राइवर के आइडल है और हर F1 ड्राइवर इनके जैसा बनना चाहता है। वहीं, अजित एक एक्टर होने के साथ ही पेशेवर रेसकार ड्राइवर ही है, तो McLaren Senna हाइपरकार उनके लिए एक कार नहीं, बल्कि एक बेहद खास तोहफा है, क्योंकि उनके भी आइडल Ayrton Senna है। आइए जानते हैं कि इस कार में इतना खास क्या है?

अजित कुमार के लिए McLaren Senna क्यों खास?

अजित कुमार को डिलीवर हुई McLaren Senna Hypercar का कलर मार्लबोरो लिवरी है। इस कार पर Ayrton Senna का ऑटोग्राफ भी हैं। अजित कुमार ने इसकी डिलीवरी का एक वीडियो अपने सोशल मीडिया पर शेयर किया है, जिसमें एक्टर एक कमरे में McLaren Senna को देखते दिखाई दे रहे हैं, जिसके बटरफ्लाई डोर्स खुले हुए हैं। इस कार के पीछे लीजेंड F1 ड्राइवर Ayrton Senna का वीडियो भी चल रहा है, जो इस पल को और भी खास बना देता है। अजित इस कार की डिलीवरी के समय हल्के भावुक भी दिखाई देते हैं। अजित कुमार ने कार की डिलीवरी के बाद इसकी राइड के लिए भी निकल पड़ते हैं।

McLaren Senna क्यों है खास?

ऑटोकार निर्माता कंपनी McLaren ने इसकी केवल 500 यूनिट का ही प्रोडक्शन किया है। इसके Senna GTR वर्जन के केवल 75 यूनिट ही बनाए गए हैं। इसके Senna LM आई, जिसकी केवल 35 यूनिट ही बनाई गई थी।

McLaren Senna में 4.0-लीटर ट्विन-टर्बोचार्ज्ड V8 इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 789 hp की पावर और 800 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इस कार को 800 किलोग्राम डाउनफोर्स के साथ डिजाइन करना चाहिए। इसमें 7-स्पीड डुअल-क्लच ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन दिया गया है।

अजित कुमार का कार कलेक्शन

अजित कुमार के पास पहले से ही Ferrari SF90, Porsche 911 GT3 RS और McLaren 750S जैसी गाड़ियां है।

हाई-स्पीड में कार की खिड़की-दरवाजे खोलने से हो सकता है भयंकर हादसा, ये घटना बनी सबक

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हाई-स्पीड इनोवा कार के दरवाजा खोलने पर हुआ भयंकर हादसा एक सबक बन गया है। इस घटना ने साफ कर दिया कि चलती कार में खिड़की या दरवाजा खोलना कितना खतरनाक हो सकता है। आइए जानने की कोशिश करते हैं कि ये हादसा क्यों हुआ।

हाई-स्पीड में चल रही कार की खिड़की या दरवाजे खोलने से कितना बड़ा हादसा हो सकता है, यह कार चलाने वाले हर व्यक्ति को जान लेना चाहिए। इस हफ्ते छत्तीसगढ़ के शहर बिलासपुर में कार एक्सीडेंट की ऐसी घटना हुई जिसने सबको हैरत में डाल दिया। हुआ यूं कि हाईवे पर एक इनोवा कार लगभग 100 की स्पीड में जा रही थी कि ड्राइवर गुटखा थूकने के लिए कार का दरवाजा खोल देता है। दरवाजा खोलते ही अचानक कार का कंट्रोल बिगड़ जाता है और वह हाईवे पर तेज रफ्तार में कई बार पलट जाती है और उसके परखच्चे उड़ जाते हैं। इस भीषण सड़क हादसे में कार सवार एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो जाती है, जबकि कार में बैठे दूसरे लोगों को भी गंभीर चोटें आती हैं। इस घटना के बाद एक बात पर चर्चा होने लगी है कि क्या तेज रफ्तार कार में खिड़की या दरवाजा खोलने पर इतना बड़ा हादसा हो सकता है? अगर आप भी यह सोच रहे हैं कि कार की स्पीड का खिड़की और दरवाजा खोलने से क्या लेना-देना है, तो यहां हम आपको कुछ ऐसी बाते बताने जा रहे हैं जो काफी साइंटिफिक हैं और कार के कंट्रोल पर सीधा असर डालती हैं।

एयर ड्रैग से हो सकता है एक्सीडेंट

कार चलाते हैं और एयर ड्रैग के बारे में नहीं जानते तो आपको ये जान लेना चाहिए। जब कोई गाड़ी सड़क पर चलती है तो हवा अवरोध या रूकावट पैदा करती है जिसे एयर ड्रैग करते हैं। यह एक तरह का फोर्स होता है जो कार को पीछे धकेलता है। पतंग से लेकर हवाई जहाज तक इसी एयर ड्रैग के वजह से हवा में उड़ान भरते हैं। लेकिन वाहनों के मामले में ये खतरनाक हो सकता है। दरअसल, कार के अंदर खाली जगह यानी वैक्यूम (Vaccum) होता है। अगर खिड़की और दरवाजे बंद हों तो हवा अंदर नहीं आ पाती जिससे कार में एयर ड्रैग उत्पन्न नहीं हो पाता। लेकिन यदि तेज रफ्तार में खिड़की या दरवाजे खोल दिए जाएं तो हवा काफी तेजी से कार के अंदर घुसती है जिससे काफी तगड़ा एयर ड्रैग पैदा होता है। ये इतना मजबूत होता है कि चलती कार का नियंत्रण बिगाड़ सकता है। कार जितनी बड़ी होती है उसपर एयर ड्रैग का उतना ही ज्यादा प्रभाव पड़ता है।हालांकि, कम रफ्तार में एयर ड्रैग की ताकत भी काफी कम होती है जिसका कार पर कोई असर नहीं होता। आपने कई बार सुना होगा कि कार की खिड़की खोलकर ड्राइव करने पर माइलेज कम हो जाती है। यह इसी एयर ड्रैग के वजह से होता है जिसके चलते कार के इंजन को स्पीड मेंटेन रखने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए कई ऑटो एक्सपर्ट बेहतर माइलेज के लिए खिड़कियों को बंद रखकर ड्राइव करने की सलाह देते हैं।

कुछ बातों का जरूर रखें ध्यान

अगर आप हाईवे पर ड्राइव कर रहे हैं तो खिड़कियों को हमेशा बंद रखकर ड्राइव करें। इससे कार एयर ड्रैग से बची रहेगी और माइलेज भी अच्छा मिलेगा। खिड़कियों को बंद रखने से आप बाहर की धूल-मिट्टी और प्रदूषण से भी बचे रहेंगे और आपके स्वास्थ्य को कम नुकसान होगा। अगर ड्राइव करते समय कार में छोटे बच्चे भी हैं तो हमेशा सेंट्रल लॉकिंग का इस्तेमाल करें ताकि वह शरारत में दरवाजा न खोल पाएं। बच्चों को खिड़कियां खोलने से भी रोकें।

किसान ने रोल्स रॉयस कलिनन से जोता खेत, क्या है वीडियो के पीछे की सच्चाई

परिवहन विशेष न्यूज

सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक किसान रोल्स रॉयस कलिनन से खेत जोत रहा है। वीडियो में एसयूवी के पीछे हल लगा हुआ है। यह वीडियो एआई द्वारा बनाया गया है क्योंकि रोल्स रॉयस कलिनन में ऐसा कोई फीचर नहीं है जिससे हल को जोड़ा जा सके। कलिनन में ऑफ-रोड क्षमता है लेकिन यह हल्के रास्तों के लिए है कृषि कार्य के लिए नहीं।

नई दिल्ली। रोल्स रॉयस कलिनन का कोई भी नाम सुनता है कि तो उसके आंखों के सामने एक बेजोड़ लग्जरी और करोड़ों की कीमत वाली गाड़ी उभरती है। यह कोई सिंपल SUV नहीं, बल्कि अल्ट्रा-लग्जरी सेगमेंट की सबसे पॉपुलर कार है। इसे आरामदायक सफर और लग्जरी एक्सपीरिएंस के लिए बनाया गया है। हाल में इसका एक ऐसा वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसे देखकर कोई भी हैरान हो जाएगा। इस वीडियो में एक किसान अपनी रोल्स रॉयल से खेत जोतते हुए दिखाई दे रहा है। इस वीडियो को देखने के बाद एक सवाल उठता है कि क्या दुनिया की सबसे महंगी SUVs में से एक को खेत में ट्रैक्टर की जगह इस्तेमाल किया जा रहा है? आइए इस वायरल वीडियो जो दिख रहा है क्या वह सच है?

Rolls-Royce Cullinan का वायरल वीडियो

वायरल वीडियो में एक Rolls-Royce Cullinan खेत में चलती हुई दिख रही है, जिसके पीछे जुताई करने वाला हल लगा हुआ दिख रहा है। इस वीडियो को देखकर कोई भी अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पाएगा। एक ऐसी कार जिसे सिर्फ सड़कों पर शान से चलने के लिए बनाया गया है, उसका इस्तेमाल खेत की जुताई के लिए किया जा रहा है।

Rolls-Royce वायरल वीडियो की सच्चाई

जैसा वायरल वीडियो में देखने के लिए मिल रहा है, उसके पीछे की कहानी कुछ और ही है। इस वीडियो को पूरी तरह से AI की मदद से बनाया गया है। Rolls-Royce Cullinan में ऐसी कोई फीचर नहीं दिया जाता है, जिसकी मदद से ट्रैक्टर के पीछे लगने वाले हल को इससे जोड़ा जा सकें। Cullinan में ऑफ-रोड कैपेसिटी मिलती है, लेकिन वह शहरी या हल्के उबड़-खाबड़ रास्तों के लिए होती है न कि कठोर कृषि कार्य के लिए। इसमें दिया जाने वाला ग्राउंड क्लीयरेंस और सस्पेंशन खेती के लिए इस्तेमाल होने वाले एक्सेसरीज को खींचने और उबड़-खाबड़ खेत में काम करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं हैं।

मारुति सुजुकी ने बनाया नया रिकॉर्ड, इंडियन रेलवे से की 5 लाख से ज्यादा गाड़ियां डिलीवर

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारतीय रेलवे के माध्यम से 5 लाख से ज्यादा गाड़ियों की डिलीवरी करके एक नया रिकॉर्ड बनाया है। यह उपलब्धि ग्रीन लॉजिस्टिक्स की दिशा में एक बड़ा कदम है। रेलवे के इस्तेमाल से ईंधन की बचत हुई है और कार्बन उत्सर्जन में भी भारी कमी आई है जिससे 1.8 लाख टन से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम हुआ है।

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki ने एक शानदार उपलब्धि हासिल की है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में कंपनी ने भारतीय रेलवे के जरिए 5 लाख से ज्यादा गाड़ियों की डिलीवरी की है, जो कंपनी के लिए एक बड़ा और नया रिकॉर्ड है। इतना ही यह ग्रीन लॉजिस्टिक्स की दिशा में कंपनी का बड़ा कदम भी है। आइए जानते हैं कि Maruti Suzuki के लिए यह उपलब्धि क्यों खास है?

Maruti के लिए क्यों है खास?

Maruti Suzuki के लिए यह उपलब्धि इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि FY 2024-25 में कंपनी द्वारा भेजे गए कुल वाहनों का लगभग एक-चौथाई हिस्सा रेलवे के ही भेजा गया है। सड़क के बजाय रेलवे का इस्तेमाल करने से न केवल फ्यूल की बचत हुई है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी भारी कमी आई है। इसकी वजह से 1.8 लाख टन से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर उत्सर्जन कम हुआ है। इसके साथ ही कंपनी ने 630 लाख लीटर से ज्यादा फ्यूल की बचत की है, जो आर्थिक रूप से फायदेमंद है। वहीं, रेलवे का इस्तेमाल से सड़कों पर गाड़ियों की भीड़ भी कम होती है, जिससे ट्रैफिक जाम और हादसे की संभावना भी कम होती है।

Maruti सबसे पहले मिला था ये लाइसेंस

Maruti Suzuki भारत की ऐसी कंपनी है, जिसे साल 2013 में ऑटोमोबाइल-फ्रेट-ट्रेन-ऑपरेटर लाइसेंस मिला था। तब से लेकर अब तक कंपनी ने रेलवे के जरिए कुल मिलाकर करीब 24 लाख गाड़ियों की डिलीवरी की है। इतना बड़ा आंकड़ा दिखाता है कि कंपनी पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को कितनी गंभीरता से लेती है।

कैसे यह सिस्टम काम करता है?

Maruti Suzuki हाल के समय में रेलवे का इस्तेमाल करके 20 से ज्यादा हब तक गाड़ियों को भेजने का काम करता है। इस हब से पूरे भारत में 600 से ज्यादा शहरों में वाहनों की डिलीवरी की जाती है।

बुजुर्ग की महत्ता

विजय गर्ग

वर्तमान में देश की आबादी में 60 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के लोगों का प्रतिशत 9.5 है। 2036 में ऐसे लोगों की आबादी बढ़कर 13.9 प्रतिशत हो जाएगी। चौथी रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की है। इसमें कहा गया है कि अगले 25 वर्षों में भारत की आबादी में 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की हिस्सेदारी 20.8 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी। अर्थात देश में हर पांचवां व्यक्ति बुजुर्ग की श्रेणी में होगा। 2024-2050 के बीच देश की कुल आबादी 18 प्रतिशत ही बढ़ेगी, मगर वृद्ध जनसंख्या में 134 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होगी।

देश में 16वीं जनगणना की अधिसूचना जारी हो चुकी है। देश में यह पहली ऐसी जनगणना होगी, जहां आंकड़ों का संकलन कागज- कलम से न होकर डिजिटल आधार पर किया जाएगा। 2011 के बाद होने वाली इस जनगणना में जाति गणना भी शामिल होगी। इस जनगणना से भारत में गरीबी, शिक्षा, लोगों की आय, लिंगानुपात, जाति, पंथ, अमीरी-गरीबी, युवा-बुजुर्ग इत्यादि की तस्वीर साफ होगी। अभी हम युवा देश हैं, परंतु हाल में देश में लिंगानुपात से संबंधित जो रपटें आई हैं, उनमें देश में वृद्धजनों की बढ़ती आबादी का आकलन किया गया है। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। पहली रिपोर्ट प्लेसेस नामक जर्नल में प्रकाशित हुई है। इसके आंकड़े बताते हैं कि आज भारत का हर चौथा - पांचवां बुजुर्ग स्मृति लोप, भाषा का ठीक से प्रयोग न करने, सोचने-समझने एवं निर्णय लेने की क्षमता के कमजोर हो जाने जैसी समस्याओं से जूझ रहा है।

दूसरी रिपोर्ट भारतीय स्टेट बैंक ने जारी की है। इसके अनुसार भारत की कामकाजी आबादी की औसत आयु 2021 में 24 वर्ष के मुकाबले साल 2026 में बढ़कर 28-29 वर्ष हो जाएगी। आज चीन की कामकाजी औसत आयु 39.5 साल है। वहीं यूरोप में यह 42 साल, उत्तरी अमेरिका में 38 एवं एशिया में 32 साल है। वैश्विक स्तर पर यह औसत आयु 30.4 वर्ष दर्ज की गई है। एसबीआइ की रिपोर्ट संकेत देती है कि भारत में शून्य से चौदह साल के बच्चों की आबादी में गिरावट आ रही है। 1991 में इनकी जो आबादी 36.4 करोड़ थी, वह 2026 में घटकर 34 करोड़ रहने वाली है। आबादी में 1991 में इनकी जो हिस्सेदारी 37 प्रतिशत थी, वह वर्ष 2026 में घटकर 24.3 प्रतिशत रह जाएगी। इस प्रकार 60 साल से अधिक उम्र के लोगों की आबादी विगत ढाई दशक में बढ़कर दोगुनी हो गई है। इसका अर्थ है कि 2001 में बुजुर्गों की जो आबादी 7.9 करोड़ थी, वह साल 2026 में बढ़कर 15 करोड़ के आसपास पहुंच जाएगी। इनमें 7.7 करोड़ पुरुष तथा 7.3 करोड़ महिलाएं होंगी। इसी तरह वर्ष 2001 में देश में जो कामकाजी आबादी 58.6 करोड़ थी, 2026 में इसके बढ़कर 91 करोड़ होने का अनुमान है। माना जा रहा है कि अगली जनगणना में देश की कुल आबादी में 67 प्रतिशत हिस्सेदारी कामकाजी लोगों की होगी। इसी संदर्भ में तीसरी रिपोर्ट केंद्र सरकार के सांख्यिकी मंत्रालय ने प्रकाशित की है। यह बताती है कि देश में 2036 तक बच्चों एवं किशोरों की आबादी में गिरावट दर्ज होगी और बुजुर्गों एवं मध्यम उम्र के लोगों की संख्या बढ़ेगी। इस रिपोर्ट के अनुसार 2021 में आबादी में 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की हिस्सेदारी 26.2 प्रतिशत थी, लेकिन 2026 में यह घटकर 20.6 प्रतिशत रह जाएगी। 2021 में 35-49 आयुवर्ग के लोगों की आबादी में हिस्सेदारी 19.1 प्रतिशत थी, परंतु 2026 में इस आयुवर्ग का प्रतिशत बढ़कर 23 प्रतिशत हो जाएगा।

वर्तमान में देश की आबादी में 60 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के लोगों का प्रतिशत 9.5 है। 2036 में ऐसे लोगों की आबादी बढ़कर 13.9 प्रतिशत हो जाएगी। चौथी रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की है। इसमें कहा गया है कि अगले 25 वर्षों में भारत की आबादी में 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की हिस्सेदारी 20.8 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी। अर्थात देश में हर पांचवां व्यक्ति बुजुर्ग की श्रेणी में होगा। 2024-2050 के बीच देश की कुल आबादी 18 प्रतिशत ही बढ़ेगी, मगर वृद्ध जनसंख्या में 134 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होगी। इस रिपोर्ट के अनुसार 2022 2023 तक भारत में बुजुर्गों की आबादी 14.9 करोड़ थी। यानी कुल आबादी में इनका हिस्सा 10.5 प्रतिशत था। इस तरह देश में 100 कामकाजी लोगों पर 16 वृद्धजन निर्भर हैं। इससे देश में कामकाजी युवाओं और वृद्धजनों के बीच संतुलन के बिगड़ने की आशंका है। अभी संयुक्त राष्ट्र की नवीनतम जनसांख्यिकी रिपोर्ट से पता चला है कि 2025 के अंत तक भारत की आबादी दुनिया में सर्वाधिक 1.46 अरब तक पहुंच जाएगी। इस रिपोर्ट से देश की जनसंख्या संरचना, प्रजनन क्षमता एवं जीवन प्रत्याशा में भविष्य में बड़े परिवर्तन के संकेत मिलते हैं।

उपरोक्त रपटों का सार यही है कि यदि भारत में बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है तो फिलहाल उससे कहीं बढ़े हुए अनुपात में कामकाजी युवक- युवतियों की संख्या भी बढ़ रही है । आज ब्रिक्स देशों में जन्म दर और जनसंख्या वृद्धि दर साल दर साल घट रही है। जापान, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया एवं ब्रिटेन जैसे देशों में जनसंख्या के बढ़ने का स्तर अमूमन शून्य हो चुका है। निःसंदेह भविष्य में वहां वृद्धजनों की संख्या बढ़ेगी और कार्यशील जनसंख्या कम होती जाएगी। इससे उनका उत्पादन स्वतः ही घटेगा। भविष्य में भारत उन देशों में प्रमुख होगा, जहां कार्यशील युवा जनसंख्या सबसे अधिक होगी। प्रधानमंत्री मोदी 2047 तक जिस विकसित भारत की कल्पना कर रहे हैं, उसके लिए यदि युवाओं की ऊर्जा, शक्ति, उत्साह और सामर्थ्य देश के काम आएगा तो उसी अनुपात में वरिष्ठजनों का अनुभव भी भारत के निर्माण में पथ प्रदर्शक का कार्य करेगा। फिर भी आज की आवश्यकता यही है कि युवाओं के बेहतर भविष्य के साथ वरिष्ठजनों के लिए सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा के भी प्रबंध हों।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल

समाज की चुप्पी से मजबूत होता नशा बाजार

विजय गर्ग

हर साल २६ जून को जब दुनिया अंतर्राष्ट्रीय नशा निषेध दिवस मनाती है, तो सवाल सिर्फ इतना नहीं कि हम इसके खिलाफ कितनी बातें कर रहे हैं—बल्कि यह है कि क्या हम इसके खिलाफ सच में खड़े हो रहे हैं? यह दिन केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक जागृति का आह्वान है—एक ऐसी क्रांति की शुरुआत, जो नशे की जड़ों को उखाड़ फेंके और समाज को उसकी चपेट से मुक्त करे।

नशे की त्रासदी केवल इसके शारीरिक या मानसिक नुकसान तक सीमित नहीं है; इसकी असली ताकत उस सामाजिक स्वीकार्यता में है, जो इसे धीरे-धीरे हमारे जीवन में घुसने देती है। स्कूल के किशोर से लेकर कॉरपोरेट ऑफिस में काम करने वाले प्रोफेशनल तक, नशा अब एक 'पर्सनल च्वॉइस' का लबादा ओढ़ चुका है। संयुक्त राष्ट्र की २०२३ की विश्व ड्रग रिपोर्ट के अनुसार, विश्व भर में लगभग २९.६ करोड़ लोग नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, और यह संख्या हर साल बढ़ रही है। एनसीआरबी और अन्य सर्वेक्षणों के अनुसार, भारत में 15 से 34 वर्ष की आयु के बीच के लाखों युवा नशे की चपेट में हैं। इनमें से कई स्कूली बच्चे और कॉलेज छात्र हैं, जो ड्रग्स, शराब, और तंबाकू के जाल में फंस रहे हैं।

नशे की यह महामारी केवल एक व्यक्ति की कमजोरी नहीं है; यह एक सामाजिक संरचना की खामी है। जब नशा 'कूल' होने का पर्याय बन जाता है, जब फिल्मों में सिगरेट का धुआं या शराब का ग्लास 'हीरोइज्म' का प्रतीक दिखाया जाता है, तो हमारी युवा पीढ़ी को गलत संदेश मिलता है। आज का युवा नशे को स्टेटस, स्टाइल, और स्वतंत्रता से जोड़ता है। यह एक ऐसी भ्रांति है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन को बर्बाद करती है, बल्कि पूरे समाज के नैतिक और सांस्कृतिक ढांचे को कमजोर करती है। नशा केवल शरीर को नहीं खोखला करता; यह सपनों, रिश्तों, और आत्मविश्वास को भी नष्ट करता है।

नशे के पीछे कई कारण गिनाए जाते हैं—तनाव, बेरोजगारी, सामाजिक दबाव, या फिर दोस्तों का प्रभाव। लेकिन क्या हमने कभी यह पूछा कि हमारी व्यवस्था इस समस्या को रोकने में कितनी नाकाम रही है? नशा विरोधी कानून, जैसे नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट (एनडीपीएस), 1985, भारत में मौजूद हैं, लेकिन इनका प्रभावी कार्यान्वयन कहां है? स्कूलों में नशे के खिलाफ जागरूकता के नाम पर साल में एक बार भाषण या पोस्टर प्रतियोगिता करवा दी जाती है, लेकिन क्या यह पर्याप्त है? ड्रग तस्करी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की कमी और नशे की आसान उपलब्धता इस समस्या को और बढ़ा रही है। हाल के वर्षों में भारत में सस्ते और खतरनाक सिंथेटिक ड्रग्स, जैसे मेफेड्रोन की तस्करी में वृद्धि हुई है। ये नशीले पदार्थ न केवल सुलभ हैं, बल्कि इनका प्रचार सोशल मीडिया और डार्क वेब के जरिए भी हो रहा है।

नशे का प्रभाव केवल शारीरिक या मानसिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक भी है। नशे की लत के कारण लोग अपनी नौकरी, शिक्षा, और सामाजिक प्रतिष्ठा खो देते हैं। परिवार टूटते हैं, बच्चे अनाथ होते हैं, और समाज में अपराध बढ़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, नशीले पदार्थों के दुरुपयोग से होने वाली बीमारियों और अपराधों का वैश्विक आर्थिक बोझ अरबों डॉलर में है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहां पहले ही संसाधनों की कमी है, नशे की यह महामारी एक और बड़ी चुनौती है।

इस समस्या का समाधान केवल सरकारी नीतियों या कानूनों तक सीमित नहीं हो सकता। इसके लिए एक सामूहिक प्रयास की जरूरत है, जिसमें हर व्यक्ति, हर परिवार, और हर समुदाय की जिम्मेदारी बनती है। माता-पिता को अपने बच्चों से खुलकर बात करनी होगी—न कि डर या ताने के साथ, बल्कि प्यार और विश्वास के साथ। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के व्यवहार पर नजर रखें और उन्हें नशे के खतरों के बारे में शिक्षित करें। स्कूलों और कॉलेजों में नशा निषेध पर नियमित कार्यशालाएं और काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाने चाहिए। सरकार को नशा तस्करी के खिलाफ सख्ती बरतनी होगी और नशामुक्ति केंद्रों की संख्या और गुणवत्ता बढ़ानी होगी।

दुर्लभ चंद्रमा क्रिस्टल जो पृथ्वी को शक्ति दे सकता है

विजय गर्ग

चंद्रमा के निकट की ओर पाया जाने वाला एक दुर्लभ चंद्र क्रिस्टल वैज्ञानिकों को दुनिया के लिए असीम शक्ति प्रदान करने की उम्मीद दे रहा है - हमेशा के लिए।

चंद्र क्रिस्टल सामग्री से बना है जो पहले वैज्ञानिक समुदाय के लिए अज्ञात है और इसमें परमाणु संलयन प्रक्रिया के लिए एक प्रमुख घटक है, बिजली उत्पादन का एक रूप जो उसी बलों को नुकसान पहुंचाता है जो आकाशगंगा में सूर्य और अन्य सितारों को ईंधन देता है।

क्रिस्टल 2020 में चंद्रमा से एकत्र किए गए चंद्र बेसाल्ट कणों में पाया गया था और चीन को अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ के पीछे एक नए चंद्र खनिज की खोज करने वाला तीसरा देश बनाता है। चीनी चंद्रमा मिशन दिसंबर 2020 में तूफानों का महासागर में उतरा और 1970 के दशक के बाद से पहला चंद्र नमूना वापसी मिशन था।

1.7 किलोग्राम से अधिक चंद्र नमूने एकत्र किए गए और पृथ्वी पर सुरक्षित रूप से वितरित किए गए।

बीजिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ यूरेनियम जियोलॉजी ने चांद की पौराणिक चीनी देवी चांग ई के बाद फॉस्फेट मिनरल चेंजेसाइट-(वाई) का नाम दिया है. क्रिस्टल पारदर्शी और मोटे तौर पर एक ही मानव बालों की

चौड़ाई है। यह चंद्रमा के एक क्षेत्र में बना था जो लगभग 1.2 बिलियन साल पहले ज्वालामुखी सक्रिय था।

इस क्रिस्टल में पाए जाने वाले प्राथमिक अवयवों में से एक हीलियम -3 है, जो वैज्ञानिकों का मानना है कि परमाणु संलयन रिएक्टरों के लिए एक स्थिर ईंधन स्रोत प्रदान कर सकता है। तत्व पृथ्वी पर अविश्वसनीय रूप से दुर्लभ है, लेकिन यह चंद्रमा पर काफी प्रचलित लगता है। चीन का अगला चंद्रमा मिशन 2024 में चांग ई 6 होने की उम्मीद है, जो चंद्रमा के दूर की ओर से पहले नमूने एकत्र करने का प्रयास करेगा - जो कभी पृथ्वी का सामना नहीं करता है।

हालांकि वैज्ञानिकों के लिए इस तरह के ईंधन स्रोत पर कोई वित्तीय अनुमान लगाना जल्दबाजी होगी, लेकिन यह निस्संदेह बेहद महंगा होगा। निश्चित रूप से, क्रिस्टल को चंद्रमा से वापस लाने की बात है, विशेष रूप से बड़ी मात्रा में जो ईंधन संलयन रिएक्टरों के लिए आवश्यक हैं।

दशकों से, वैज्ञानिकों को हीलियम -3 और परमाणु संलयन के लिए ईंधन के संभावित स्रोत द्वारा साज़िश किया गया है। परमाणु संलयन प्रतिक्रियाएं स्वाभाविक रूप से होती हैं, जब दो प्रकाश परमाणु अत्यधिक दबाव और गर्मी के तहत एक भारी में विलय हो जाते हैं। वे सितारों के अंदर होते हैं, लेकिन मनुष्यों को अभी तक इस प्रक्रिया को किकस्टार्ट करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा के साथ एक संलयन रिएक्टर बनाना है।

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार, हीलियम -3 विशेष रूप से आशाजनक है क्योंकि यह अन्य तत्वों की तुलना में काफी कम विकिरण और परमाणु अपशिष्ट पैदा करता है। वर्तमान परमाणु विखंडन प्रक्रिया, जिसका उपयोग परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में किया जाता है, न केवल ऊर्जा, बल्कि रेडियोधर्मिता को जारी करती है, और खर्च किए गए परमाणु ईंधन को यूरेनियम, प्लूटोनियम और अन्य कचरे में पुनः संसाधित किया जाना चाहिए। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने गंभीर सुरक्षा चिंताओं को उठाया है, और परिणामस्वरूप, वैज्ञानिक विखंडन के बजाय परमाणु संलयन से परमाणु शक्ति बनाने का एक तरीका खोज रहे हैं। संलयन प्रक्रिया के दौरान, रेडियोधर्मी अपशिष्ट का उत्पादन नहीं किया जाता है, संभवतः एक सुरक्षित और अधिक कुशल ईंधन स्रोत बनाता है।

पूरी तरह से लोड किए गए स्पेस शटल कार्गो बे के बराबर लगभग 25 टन हीलियम -3, एक साल के लिए अमेरिका को बिजली दे सकता है। अनुमानों के अनुसार, इसका मतलब यह है कि हीलियम -3 का संभावित किफायती मूल्य $ 3वीएन एक टन है।

अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ कई निजी कंपनियों और देशों ने हीलियम -3 के लिए चंद्रमा को खदान करने के अपने इरादों का संकेत दिया है, और यह नवीनतम खोज दौड़ को किकस्टार्ट कर सकती है।

कहानी:परी की सलाह

विजय गर्ग

गोलू अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। उसके माता-पिता यह सोचकर कि वे उसे बहुत समय नहीं दे पाते हैं, उसकी हर मांग पूरी करते थे। इससे वह स्वार्थी बन गया था।

असल में उसका नाम पार्थ था। गोलू के पास किसी चीज की कमी नहीं थी, लेकिन उसके दोस्त नहीं थे। कोई उसकी प्रशंसा नहीं करता था, क्योंकि वह किसी के साथ कुछ भी बांटना पसंद नहीं करता था। वह अकेला था और हमेशा उदास रहता था। इस वजह वह चिड़चिड़ा हो गया था ।

गोलू को खाने के लिए रोज पैसे मिलते थे। वह खाने में खुशी ढूंढ़ता था। बच्चे उसे नापसंद करते थे, इसलिए वह उनके प्रति नाराजगी रखता था। एक दिन टीचर ने पढ़ाते हुए बताया कि हमारे देश में हजारों-लाखों ऐसे बच्चे हैं जिन्हें एक वक्त का खाना भी नहीं मिलता। उस दिन जब वह कैंटीन से खाने के लिए चीजें खरीदने गया तो उसे टीचर की बात याद आई। उस दिन उसने कुछ नहीं खरीदा। वह स्कूल बस से उतर कर घर के पास ही बनी एक मिठाई की दुकान के पास रखी बैंच पर जाकर बैठ गया।

तभी एक परी उसके पास आकर बैंच पर बैठ गई। 'क्या तुम जानते हो कि लाखों बच्चे ऐसे हैं जो अक्सर भूखे रहते हैं ? 'मुझे मालूम है।'

गोलू ने धीरे से कहा। गोलू, तुम्हें जो रोज पैसे मिलते हैं, इनसे चाकलेट, चिप्स, केक, टाफी जैसी चीजें खरीदने के बजाय जिनसे मोटापा बढ़ता है तुम बीज खरीद सकते हो ?' 'मैं बीज क्यों खरीदूं? मुझे भूख लग रही है। मैं मिठाई खरीदने जा रहा हूं'। गोलू ने चिढ़ते हुए कहा । 'तुम अगर मेरी बात मानोगे तो तुम्हारा वजन कम हो जाएगा। तुम फिर सबके साथ खेल भी पाओगे। दो दुकानें छोड़कर जो दुकान है तुम वहां जाओ और सब्जियां उगाने के लिए बीज खरीदो।'

'मैं कोई किसान हूं जो सब्जी उगाऊंगा। यह मेरा काम नहीं है।' गोलू गुस्से से बोला । 'तुम अपने घर के बगीचे में इन्हें लगाना। तुम्हारे मम्मी- पापा को भी खुशी होगी और वे अवश्य ही तुम्हारी मदद भी करेंगे। जब सब्जियां उग जाएं तो उन्हें उन भूखे बच्चों को देना । बगीचे की देखभाल करने से तुम्हारा वजन भी कम हो जाएगा। जानते हो, यह एक तरह का व्यायाम ही 'है। फिर तुम मजे से फुटबाल और अन्य दौड़ने वाले खेल भी खेल पाओगे।' परी ने उसे समझाया।

गोलू ने परी की बात मान ली। परी उसे बताती जा रही थी कि कौन से बीज खरीदने हैं। परी को अभी केवल वही देख सकता है, वह पहले ही बता चुकी थी। उसका कहना था कि वह जब चाहे दूसरों को भी दिख सकती है। लेकिन कब, यह वही तय करती है।

घर आकर गोलू ने बीज अपने कमरे में एक कोने में किसी कूड़े की तरह रख दिए । अगले दिन जब वह स्कूल बस में बैठा तो परी भी उसकी बगल में आकर बैठ गई। 'तुमने बीज मिट्टी में नहीं डाले ? मुझे बड़ी निराशा हुई यह देखकर। मैंने सोचा था कि मैं तुम्हारी दोस्त बन गई हूं और तुम मेरी बात मानोगे।' परी ने दुखी स्वर में कहा।

गोलू कुछ नहीं बोला। कक्षा में भी उसका मन नहीं लगा। मैं घर के बगीचे में सब्जियां उगाना चाहता हूं। आपने जो पैसे दिए थे उनसे मैंने खाने की चीजें न खरीदकर बीज खरीदे हैं।' रात को खाना खाते वक्त उसने यह बात अपने मम्मी-पापा को बताई। उसके मम्मी-पापा को उसकी बात सुन हैरानी हुई। उन्हें लगा कि अवश्य ही गोलू की तबीयत ठीक नहीं है।

अगले दिन शनिवार था और स्कूल की छुट्टी भी सुबह बगीचे में जाकर उसने पापा की मदद से बीज मिट्टी में डाले । उसने आज बहुत मेहनत की थी, पर बैठकर हमेशा की तरह चिप्स, नमकीन, चाकलेट, केक नहीं खाया था । उसकी मम्मी ने जब उसे दाल-रोटी और सब्जी खाने को दी, तो उसने पिज्जा, बर्गर की मांग नहीं की। उसकी मम्मी को यह देख खुशी हुई।

एक दिन किस्म-किस्म की सब्जियां उगी देख गोलू खुशी से नाचने लगा। टमाटर, पालक, भिंडी, सलाद के पत्ते, खीरा और न जाने कितनी सब्जियां लहरा रही थीं। 'बताओ गोलू, आज तुम इनमें से कौन सी सब्जी खाना पसंद करोगे ?

'मैं इन सब्जियों को उन बच्चों में बांटना चाहता हूं जिन्हें भरपेट खाना नहीं मिलता।' गोलू की बात सुन उसकी मम्मी की आंखें भर आईं। गोलू कितना बदल गया है। उसका मोटापा भी कम हो रहा था और बाहर की चीजें खाने की बजाय वह घर का खाना खाने लगा है। जो पैसे उसे मिलते हैं उनसे वह बीज खरीदता है।

सबसे ज्यादा हैरानी की बात थी कि गोलू जितनी सब्जियां तोड़ता, उतनी ही कुछ दिनों बाद फिर पैदा हो जातीं। एक दिन रात को उसके मम्मी-पापा ने उसे बगीचे में जाते देखा तो उसको छुप कर वे देखने लगे। उन्होंने देखा कि खरगोश, चूहे, गिलहरियां और बहुत सारे पक्षी मिट्टी में कुछ पाउडर छिड़क रहे हैं। एक परी उन्हें निर्देश देती जा रही थी कि कैसे क्या करना है। दोपहर में ही गोलू ने नए बीज मिट्टी में डाले थे। जल्दी से पौधे निकलें और सब्जियां उग जाएं, इसके लिए परी पाउडर का छिड़काव करवा रही थी । उस पाउडर की चमक बहुत निराली थी। एक सुबह, जब वह स्कूल जाने के लिए उठा तो उसकी मम्मी यह देखकर विस्मित रह गईं कि गोलू अब गोल- मटोल नहीं रहा था। गोलू के अब बहुत सारे दोस्त थे और कोई उसे मोटा कहकर चिढ़ाता भी नहीं था। वह अपनी हर चीज बांटकर खाता था। और हां, परी उससे मिलने अब भी आती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

वैज्ञानिकों ने कैंसर के इलाज में एक सफलता पाई है, और यह समुद्र के भीतर गहरी है

विजय गर्ग

मिसिसिपी विश्वविद्यालय के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम ने समुद्री खीरे में एक दुर्लभ चीनी की खोज की है जो पारंपरिक उपचारों के खतरनाक दुष्प्रभावों के बिना कैंसर को फैलने से रोकने में मदद कर सकती है

खोज क्या कहती है?

ग्लाइकोबायोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन से पता चलता है कि समुद्र के ककड़ी होलोथुरिया फ्लोरिडाना में पाया जाने वाला एक यौगिक, सल्फ -2 को अवरुद्ध करता है, एक एंजाइम जो कैंसर कोशिकाओं को बढ़ने और मेटास्टेसाइज करने के लिए उपयोग करता है। यौगिक भविष्य के कैंसर उपचारों में एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकता है।

चौथे साल के डॉक्टरेट छात्र और अध्ययन के प्रमुख लेखक मारवा फराग ने कहा, ₹समुद्री जीवन अद्वितीय संरचनाओं के साथ यौगिक पैदा करता है जो अक्सर दुर्लभ होते हैं या स्थलीय कशेरुकी में नहीं पाए जाते हैं ।₹ ₹समुद्री खीरे में चीनी यौगिक अद्वितीय हैं। वे आमतौर पर अन्य जीवों में नहीं देखे जाते हैं। इसलिए वे पढ़ने लायक हैं अधिक कहानियों का अन्वेषण करें ट्रम्प ने उत्तरी कैरोलिना विमान दुर्घटना में मारे गए IranPilot के साथ संघर्ष को तेज करने के बीच इजरायल के बहुस्तरीय रक्षा और

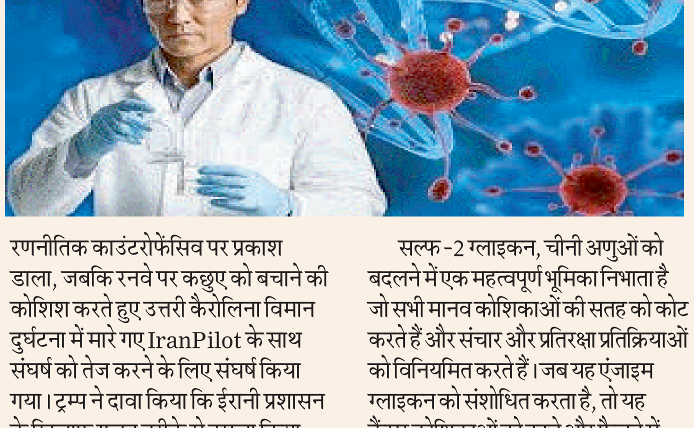

रणनीतिक काउंटरोफेंसिव पर प्रकाश डाला, जबकि रनवे पर कछुए को बचाने की कोशिश करते हुए उत्तरी कैरोलिना विमान दुर्घटना में मारे गए IranPilot के साथ संघर्ष को तेज करने के लिए संघर्ष किया गया। ट्रम्प ने दावा किया कि ईरानी प्रशासन के खिलाफ गलत तरीके से हमला किया गया था। अप्रत्यक्ष रूप से प्रगति यहाँ क्यों ब्रैड पिट और इनेस डी रेमन के रिश्ते कथित तौर पर चट्टानों पर हैं - अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि यह अच्छा नहीं लग रहा है भूकंपः इजरायल के साथ बढ़ते तनाव के बीच 5.1 तीव्रता का भूकंप सेमनान, ईरान को हिट करता हैः घटना की तारीख, स्थान, समय और टेस्ला के नए स्वायत्त वाहन हैली बीबर के बारे में सभी खबरें एक मध्य-न्यूपेटियल सौदे को सुरक्षित करने का आग्रह करती हैं क्योंकि जस्टिन के व्यवहार में आसन्न विभाजन की अफवाहें हैं

सल्फ -2 ग्लाइकन, चीनी अणुओं को बदलने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो सभी मानव कोशिकाओं की सतह को कोट करते हैं और संचार और प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं को विनियमित करते हैं। जब यह एंजाइम ग्लाइकन को संशोधित करता है, तो यह कैंसर कोशिकाओं को टूटने और फैलने में मदद करता है। सल्फ -2 को अवरुद्ध करने से ट्यूमर स्वस्थ ऊतकों पर आक्रमण करने से रोक सकता है।

यह चीनी अनिवार्य रूप से सेलुलर 'वन,' की छंटाई को रोकती है डॉ। फार्माकोग्नॉसी के एसोसिएट प्रोफेसर विटोर पोमिन। अगर हम उस एंजाइम को रोक सकते हैं, तो हम कैंसर के प्रसार के खिलाफ लड़ रहे हैं

शोध टीम, जिसमें जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी शामिल थे, ने चीनी के प्रभाव की पुष्टि करने के लिए प्रयोगशाला परीक्षण और कंप्यूटर मॉडलिंग का उपयोग किया। दोनों तरीकों ने लगातार परिणाम पैदा किए।

मानव उपयोग के लिए सुरक्षित

पहले से ज्ञात कुछ सल्फ -2 अवरोधकों के विपरीत, यह समुद्री ककड़ी चीनी रक्त के थक्के को प्रभावित नहीं करती है, जिससे यह मनुष्यों में उपयोग के लिए सुरक्षित हो जाती है। ₹यदि कोई अणु रक्त जमावट में हस्तक्षेप करता है, तो आप जानलेवा रक्तस्राव का जोखिम उठाते हैं,₹ डॉ। जोशुआ शार्प, फार्माकोलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर। "यह एक नहीं है."

बहुतायत की कमी

टीम को अब एक नई चुनौती का सामना करना पड़ रहा हैः समुद्री खीरे बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए फसल के लिए पर्याप्त नहीं हैं। डॉक्टर ने कहा, ₹इसे दवा के रूप में विकसित करने में एक समस्या कम उपज होगी.₹ पोमिन। ₹तो, हमें एक रासायनिक मार्ग विकसित करना होगा

वैज्ञानिक वर्तमान में प्रयोगशाला में यौगिक को संश्लेषित करने के लिए काम कर रहे हैं ताकि इसे पशु मॉडल में परीक्षण किया जा सके। व्हाट्सएप बैनर यदि सफल होता है, तो यह सफलता क्लीनर, सुरक्षित और अधिक टिकाऊ कैंसर उपचारों का मार्ग प्रशस्त कर सकती है, जो सिंथेटिक रसायनों या भूमि जानवरों से नहीं, बल्कि समुद्र तल से उत्पन्न होती है।

युद्ध दो देशों में संघर्ष ही नहीं पारिस्थितिकी तंत्र पर भी ड़ालता है असर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

देखा जाए तो आज दुनिया के हालात अच्छे नहीं कहे जा सकते। एक और युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं तो दूसरी और दुनिया के देश आंतकवादी गतिविधियों से दोचार हो रहे हैं। बांग्लादेश का तक्ता पलट हमारे सामने है तो पाकिस्तान में औपचारिक रुप से सेना द्वारा सत्ता पर काबिज होने के समाचार देर सबेर आने ही है।

युद्ध केवल जन-धन हानि तक ही सीमित नहीं रहकर इसके साइड इफेक्ट जन-धन हानि से भी अति गंभीर होते हैं। युद्ध के चलते जिस तरह के गोला-बारुद और केमिकल युक्त बम, मिसाइलें और ना जाने क्या क्या का उपयोग होता है जो प्रकृति पर दूरगामी नकारात्मक असर छोड़ते हैं। आज भले ही इजरायल-ईरान युद्ध के बीच युद्धविराम हो गया हो और भारत पाक युद्धविराम की तरह इसका श्रेय भी डोनाल्ड ट्रम्प ले रहे हो पर युद्ध के दूरगामी दुष्परिणामों से आने वाली पीढ़ी और प्रकृति किसी को माफ करने वाली नहीं है। हालांकि इजरायल-युद्ध में दोनों देशों द्वारा ही अपनी अपनी जीत के दावें किये जा रहे हैं पर यह नहीं भूलना चाहिए कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता तो दूसरी और आज के समय में युद्ध किसी निर्णायक स्तर पर पहुंच ही जाये यह भी कहा जाना बेमानी होगा। इजरायल-ईरान युद्ध से पहले इजरायल-हमास युद्ध, भारत पाकिस्तान के बीच ऑपरेशन सिन्दूर और लंबे समय से लगातार चला आ रहा रुस-यूक्रेन युद्ध हमारे सामने हैं। आज चल रहे इन युद्धों में से किसी को भी निर्णायक स्तर पर पहुंचते हुए नहीं देखा जा सकता और आज के समय के इन युद्धों को निर्णायक स्तर पर ले जाने की बात करना भी बुद्धिमानी नहीं मानी जा सकती। आज का युद्ध कोई बच्चों का खेल नहीं है। यूक्रेन जैसा छोटा सा देश रुस जैसे बिग गन का पूरे साहस के साथ मुकाबला कर रहा है।

देखा जाए तो आज दुनिया के हालात अच्छे नहीं कहे जा सकते। एक और युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं तो दूसरी और दुनिया के देश आंतकवादी गतिविधियों से दोचार हो रहे हैं। बांग्लादेश का तक्ता पलट हमारे सामने है तो पाकिस्तान में औपचारिक रुप से सेना द्वारा सत्ता पर काबिज होने के समाचार देर सबेर आने ही है। अमेरिका में दूसरे देशों से शरणार्थी के रुप में आये लोग आये दिन नाक में दम कर रहे हैं। यूरोपीय देश खासतौर से फ्रांस इसका भुक्तभोगी रह चुका है। देखा जाए तो दुनिया के अधिकांश देश अशांति के हालात से दो चार हो रहे हैं।

युद्ध चाहे आज के जमाने का हो या पुराने जमाने का अपने निशान धरती पर लंबे समय तक के लिए छोड़.जाते हैं। यह कहना कि युद्ध इतिहास की बात रह जाता है, गलत होगा। यह विश्लेषण में युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता कि युद्ध के दौरान अमुख देश के इतने करोड़ रुपए प्रतिदिन खर्च हो रहे थे या युद्ध के कारण जनहानि के साथ ही करोड़ों की संपत्ति और युद्ध सामग्री का नष्ट होना भी एक बात है। इसके साथ ही युद्ध में प्रयुक्त सामग्री खासतौर से युद्ध आयुधों के प्रयोग के कारण प्रकृति पर कितना प्रतिकूल असर पड़ता है वह अकल्पनिय होता है। हालिया युद्धों में किस तरह से मिसाइलों का इस्तेमाल किया गया है और दूसरी और उन्हें नष्ट करने के प्रयास हुए हैं। इससे केवल क्षेत्र विशेष ही नहीं अपितु वायु मण्डल, पारिस्थिति तंत्र सहित प्रकृति पर गंभीर दूरगामी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बम, गोलाबारी, धुंआ, रासायनिक तत्वों के उपयोग से ग्रीन हाउस गैसों में बढ़ोतरी हुई है।

ग्लोबल वार्मिंग पर इसका सीधा सीधा असर पड़ेगा। यह तो वायु मण्डल के प्रदूषित होने और ग्लोबल वार्मिंग की बात है दूसरी तरफ रासायनिक बमों के अवशेष और युद्ध के कारण बारुदी सुरंगों या बारुद आदि सामग्री के उपयोग के कारण भूजल, मिट्टी आदि भी प्रदूषित होती है और पानी के प्रदूषित होने और मिट्टी की उर्वरा शक्ति प्रभावित होती है। इसके साथ ही जल, थल और नभ तीनों ही स्थानों पर जैव विविधता प्रभावित होती है। वन्य जीवों के साथ ही पशु-पक्षियों सहित अन्य प्रजातियों की विलुप्ति सहित अनेक दुष्प्रभाव सामने आते हैं। युद्ध के कारण जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग से प्रदूषण के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों पर विपरीत प्रभाव आता है।

पारिस्थितिकी तंत्र के प्रभावित होने के साथ ही युद्ध के कारण जिस तरह से जन-धन हानि और प्रकृति पर विपरीत प्रभाव के साथ ही युद्ध के कारण संसाधनों के नष्ट होने, उन्हें वापिस दुरुस्त करने, आधारभूत संरचना विकसित करने और कुछ कार्य तत्काल दुरुस्त करने के होते हैं तो कुछ सुधार कार्यों में लंबा समय लगना होता है। इस तरह से युद्ध के कारण केवल दो देशों के बीच तात्कालीक संघर्ष और संघर्ष विराम मात्र नहीं होता और युद्ध का असर केवल जन-धन हानि तक ही सीमित नहीं होता यहां तक कि युद्ध का असर युद्धरत देशों तक ही नहीं होता अपितु युद्ध के कारण प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से अधिकांश देश प्रभावित होते हैं और प्राकृतिक संसाधनों पर सीधा असर पड़ता है। आज जिस तरह से विश्व गांव की बात की जाती है ग्लोबल की बात की जाती तो है यह साफ है कि युद्ध केवल युद्धरत देशों ही नहीं अपितु समूचे विश्व को युद्ध की आंच से दो चार होना पड़ता है। ऐसे में साम्राज्यवादी सोच और अहम् को त्याग कर उसके स्थान पर आपसी समझ और बातचीत से ही समस्या का समाधान महत्वपूर्ण हो जाता है।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस: राजनाथ सिंह की हुंकार - झुकेगा नहीं भारत

[एससीओ में भारत का प्रतिरोध: दोहरे मापदंडों की पोल खोल]

जब विश्व मंच पर सत्य की गूंज उठती है और साहस की हुंकार न केवल आकाश को चीरती है, बल्कि इतिहास के पन्नों को अमर कर देती है, तब एक नया युग जन्म लेता है। 26 जून 2025 को चीन के किंगदाओ में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ऐसा ही एक स्वर्णिम क्षण रचा। उन्होंने संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर करने से स्पष्ट इनकार कर दिया, क्योंकि उसमें जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए आतंकी हमले का कोई जिक्र नहीं था, जिसमें 26 लोग मारे गए थे, जिनमें एक नेपाली नागरिक भी शामिल था। इस हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े आतंकी संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' ने ली थी। इसके विपरीत, बयान में बलूचिस्तान का उल्लेख था, जिसे भारत पर परोक्ष रूप से आरोप लगाने की साजिश के तहत शामिल किया गया था। राजनाथ सिंह के इस साहसिक कदम ने न केवल पाकिस्तान और चीन की दोहरी नीतियों को नंगे सत्य के सामने ला खड़ा किया, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि भारत अब वैश्विक मंचों पर न झुकता है, न चुप रहता है। यह क्षण भारत की कूटनीतिक शक्ति और आतंकवाद के खिलाफ उसकी अटल प्रतिबद्धता का प्रतीक बन गया, जो विश्व को यह संदेश देता है कि भारत अब अपनी शर्तों पर इतिहास लिखता है।

राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में आतंकवाद को वैश्विक शांति और सुरक्षा का सबसे बड़ा शत्रु करार दिया। उन्होंने कहा, "हमारे क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विश्वास की कमी सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। इनका मूल कारण कट्टरवाद, उग्रवाद और आतंकवाद है।" यह बयान आतंकवाद को एक वैश्विक खतरे के रूप में रेखांकित करता है और उन देशों पर कटाक्ष करता है जो इसे अपनी नीति का हथियार बनाते हैं। बिना नाम लिए, उन्होंने पाकिस्तान की ओर इशारा करते हुए कहा, "कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को अपनी नीति के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और आतंकवादियों को पनाह देते हैं। ऐसे दोहरे मानदंड अस्वीकार्य हैं।" यह बयान न केवल पाकिस्तान की नीतियों को उजागर करता है, बल्कि एससीओ जैसे मंचों पर उसकी विश्वसनीयता को चुनौती देता है। पहलगाम हमले का जिक्र करते हुए राजनाथ सिंह ने बताया कि इसमें पीड़ितों को उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर निशाना बनाया गया, जो लश्कर-ए-तैयबा के पुराने पैटर्न से मेल खाता है। इस हमले के जवाब में भारत ने 7 मई 2025 को 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया, जिसमें पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकी ठिकानों पर लक्षित हवाई हमले किए गए। इस ऑपरेशन ने भारत की आतंकवाद के खिलाफ सक्रिय और आक्रामक रणनीति को प्रदर्शित किया, साथ ही यह संदेश दिया कि आतंकवाद के गढ़ अब सुरक्षित नहीं हैं। राजनाथ सिंह ने कहा, "हमने दिखाया है कि आतंकवाद के खिलाफ हमारी नीति जीरो टॉलरेंस की है। अगर हम पर हमला होगा, तो हम उसका माकूल जवाब देने का अधिकार रखते हैं।" यह बयान भारत की नई रक्षा नीति का प्रतीक है, जो आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई पर जोर देता है।

एससीओ बैठक में भारत के इस रुख ने पाकिस्तान को कठघरे में खड़ा किया और चीन को उसकी दोहरी नीतियों के लिए आड़े हाथों लिया। चीन, जो इस समय एससीओ की अध्यक्षता कर रहा था, ने संयुक्त बयान में पहलगाम हमले को शामिल न करके और बलूचिस्तान का उल्लेख करके भारत के खिलाफ कूटनीतिक चाल चलने की कोशिश की। लेकिन राजनाथ सिंह के इनकार ने इस साजिश को ध्वस्त कर दिया। भारत के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने प्रेस ब्रीफिंग में कहा, "हम चाहते थे कि दस्तावेज में आतंकवाद से संबंधित हमारी चिंता को स्पष्ट रूप से शामिल किया जाए, लेकिन एक सदस्य देश को यह स्वीकार नहीं था।" यह बयान साफ करता है कि भारत अपने सिद्धांतों पर अडिग है और किसी भी दस्तावेज को स्वीकार नहीं करेगा जो उसके रुख को कमजोर करता हो। राजनाथ सिंह ने यह भी रेखांकित किया कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मापदंड अपनाने वाले देशों की आलोचना में एससीओ को संकोच नहीं करना चाहिए। उन्होंने आतंकवाद के अपराधियों, आयोजकों, वित्तपोषकों और प्रायोजकों को जवाबदेह ठहराने की आवश्यकता पर बल दिया। यह बयान न केवल पाकिस्तान की नीतियों पर सीधा प्रहार था, बल्कि उन देशों के लिए भी एक चेतावनी थी जो आतंकवाद को परोक्ष रूप से समर्थन देते हैं। भारत ने यह भी स्पष्ट किया कि वह अफगानिस्तान में शांति और स्थिरता के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर कायम है, और इस दिशा में मानवीय सहायता और क्षमता निर्माण में योगदान देता रहेगा।

इस घटना ने भारत की कूटनीतिक रणनीति की ताकत को एक बार फिर साबित किया। राजनाथ सिंह ने न केवल पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ से मुलाकात करने से इनकार किया, बल्कि वैश्विक मंच पर उनकी नीतियों को बेनकाब भी किया। यह कदम भारत की उस नीति को दर्शाता है, जिसमें वह आतंकवाद के खिलाफ किसी भी तरह के समझौते से इनकार करता है। विपक्षी दलों, खासकर कांग्रेस ने इस फैसले पर सवाल उठाए और इसे कूटनीतिक विफलता बताया, लेकिन यह तर्क कमजोर पड़ता है जब हम भारत के दृढ़ रुख और वैश्विक मंच पर उसकी बढ़ती साख को देखते हैं। आज की दुनिया में, जहां वैश्वीकरण की गति धीमी पड़ रही है और बहुपक्षीय प्रणालियां कमजोर हो रही हैं, भारत का यह रुख एक मिसाल है। राजनाथ सिंह ने कहा, "कोई भी देश अकेले सभी चुनौतियों से नहीं निपट सकता। हमें संवाद और सहयोग के जरिए मतभेदों को सुलझाना होगा।" यह बयान भारत की प्राचीन सोच 'सर्वे जना सुखिनो भवन्तु' को प्रतिबिंबित करता है, जो वैश्विक कल्याण की भावना पर आधारित है। लेकिन साथ ही, यह स्पष्ट करता है कि भारत अपनी सुरक्षा और सिद्धांतों से कोई समझौता नहीं करेगा।

जब राजनाथ सिंह ने किंगदाओ में भारत का परचम लहराया, तो यह सिर्फ एक कूटनीतिक जीत नहीं थी, बल्कि एक नए भारत की हुंकार थी। यह भारत न तो झुकता है, न चुप रहता है। यह भारत विश्व शांति और सुरक्षा के लिए एकजुटता का आह्वान करता है, लेकिन अपने सिद्धांतों पर अटल रहता है। यह एक ऐसा भारत है, जो आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई को न केवल शब्दों में, बल्कि अपने साहसिक कार्यों में भी जीता है। यह भारत विश्व को दिखा रहा है कि सत्य, साहस और शक्ति के बल पर एक नया युग शुरू हो चुका है। राजनाथ सिंह का यह कदम न केवल भारत की कूटनीतिक ताकत का प्रतीक है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि भारत अब विश्व मंच पर एक ऐसी शक्ति है, जो न केवल अपनी बात रखता है, बल्कि उसे मनवाने का दम भी रखता है। यह भारत की नई पहचान है—एक ऐसा राष्ट्र, जो आतंकवाद के खिलाफ अपनी जंग में न कभी रुकेगा, न कभी थकेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

संविधान की प्रस्तावना से छेड़छाड़ कर कांग्रेस ने जो गलती की थी, संसद को उसे सुधारना चाहिए

नीरज कुमार दुबे

आरएसएस पर सवाल उठा रही कांग्रेस को यह भी पता होना चाहिए कि साल 2023 में नये संसद भवन में कामकाज के पहले दिन सांसदों को दी गई संविधान की प्रति में प्रस्तावना में ''समाजवादी'' और ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्द नहीं थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों की समीक्षा करने का आह्वान किया तो कांग्रेस आग बबूला हो गयी। कांग्रेस शायद भूल गयी है कि आपातकाल के दौरान जब सारा विपक्ष जेल में ठूँस दिया गया था तब इंदिरा गांधी की तत्कालीन सरकार ने संविधान की प्रस्तावना में जबरन दो शब्द जोड़ दिये थे। कांग्रेस को समझना चाहिए कि समाजवाद और धर्मनिरपेक्ष शब्द जब बाबा साहेब आंबेडकर के लिखे गये संविधान की प्रस्तावना में थे ही नहीं तो उस पर सवाल उठेंगे ही। ऐसा भी नहीं है कि आरएसएस ने ही पहली बार इन दोनों शब्दों पर सवाल उठाया हो। समाज के कई वर्गों की ओर से इन दोनों शब्दों को संविधान की प्रस्तावना में शामिल करने को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गयी थी।

आरएसएस पर संविधान विरोधी होने का आरोप लगा रही कांग्रेस शायद भूल रही है कि उसकी सरकारों ने ही सर्वाधिक बार संविधान में संशोधन किये और संविधान की प्रस्तावना तक को संशोधित कर डाला। इंदिरा गांधी सरकार ने 1976 में 42वें संविधान संशोधन के जरिए प्रस्तावना में समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्द तब जोड़े थे जब देश में आपातकाल

लगा था और विपक्ष के सारे नेता जेल में थे। यह सही है कि संविधान के अनुच्छेद 368 के अनुसार, संविधान में संशोधन किया जा सकता है और यह शक्ति संसद के पास है जो प्रस्तावना तक भी विस्तारित है। मंगर उस समय संसद ने लोकतंत्र की भावना के अनुरूप काम नहीं किया और विपक्ष की गैर-मौजूदगी में संशोधन के जरिये प्रस्तावना में भारत के वर्णन को ''संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य'' से बदलकर ''संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य'' कर दिया गया। उस समय राजनीतिक कारणों से संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्द को डाला गया। कांग्रेस को इस बात का भी जवाब देना चाहिए कि जब प्रस्तावना को 26 नवंबर 1949 में संविधान सभा ने स्वीकार किया था, तब 1976 में उसे बदल क्यों दिया गया? कांग्रेस को इस बात का भी जवाब देना चाहिए कि 1976 में किये गये संशोधन के बाद भी संविधान की प्रस्तावना में क्यों लिखा है कि उसे 26 नवंबर 1949 को स्वीकार किया गया?

आरएसएस पर सवाल उठा रही कांग्रेस को यह भी पता होना चाहिए कि साल 2023 में नये संसद भवन में कामकाज के पहले दिन सांसदों को दी गई संविधान की प्रति में प्रस्तावना में ''समाजवादी'' और ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्द नहीं थे। उस समय केंद्र सरकार ने तर्क दिया था कि यह मुद्रित प्रति ही मूल प्रस्तावना थी। कांग्रेस को समझना होगा कि संविधान में सामान्य संशोधनों और प्रस्तावना में किये गये संशोधन में बड़ा फर्क है। कांग्रेस ने आपातकाल के दौरान अलोकतांत्रिक रूप से जो कार्य किया था अब उसे ठीक करने का आह्वान किया जा रहा है तो इसमें गलत क्या है? संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी शब्द रहें या नहीं रहें, यदि इस पर संसद के दोनों सदनों में चर्चा के बाद फैसला करने की मांग की जा रही है तो इसमें गलत क्या है? यह वाकई हास्यास्पद है कि कांग्रेस आरएसएस के आह्वान को बाबा साहब के संविधान को नष्ट करने की साजिश बता रही है जबकि इसी पार्टी की सरकार ने बाबा साहेब के संविधान की प्रस्तावना से छेड़छाड़ की थी। बहरहाल, इसमें कोई दो राय नहीं कि डॉ. बीआर अंबेडकर के नेतृत्व में संविधान सभा ने विश्व का उत्तम संविधान भारत को दिया जिससे हमारे लोकतंत्र की नींव मजबूत हुई।

-नीरज कुमार दुबे
(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

"OTP से पहले उपदेश? अब नहीं!" कॉलर ट्यून की विदाई: जनता की सुनवाई या थकान की जीत?

"कॉलर ट्यून को अलविदा कहा गया।"

6 दिन पहले प्रकाशित हुआ मेरा लेख — रकॉलर ट्यून या कलेजे पर हथौड़ा: हर बार अमिताभ क्यों? जब चेतावनी बन गई चिढ़र अमिताभ बच्चन की कोविड कॉलर ट्यून ने देश को जागरूक किया, पर समय के साथ वह झुंझलाहट में बदल गई।
जनभावनाओं की अनदेखी नीतियों के विरुद्ध यह लेख देशभर में पढ़ा गया और चर्चा में आया। धन्यवाद उन सभी पाठकों का जिन्होंने इस विषय पर प्रतिक्रिया दी। लेख को 6 दिन पहले अख़बारो ने स्थान दिया — यह कलम के विश्वास का सम्मान है।

प्रियंका सौरभ

नमस्कार, हमारा देश कोविड-19 से लड़ रहा है..." इस आवाज़ को पिछले तीन सालों में 140 करोड़ भारतीयों ने लाखों बार सुना। कॉल लगाओ, तो अमिताभ बच्चन की चेतावनी पहले—बात बाद में। किसी के बीमार होने पर कॉल करो, OTP भूल जाओ तो कॉल करो, एम्बुलेंस बुलानी हो तब भी यही आवाज़, यही स्क्रिप्ट, वही धीमा, गंभीर, थोप दिया गया उपदेश।

सरकार के इस निर्णय के पीछे मंशा सही रही हो सकती है—लेकिन हर कॉल से पहले वही आवाज़ सुनने की मजबूरी कब एक 'नैतिक संदेश' से 'मानसिक उत्पीड़न' में बदल गई, किसी ने गौर नहीं किया। और शायद किसी ने सोचा भी नहीं कि जनता भी कभी जवाब देगी।

लेकिन जनता ने जवाब दिया। और सरकार ने—शायद पहली बार—जनता की थकान, झुंझलाहट और असहमति को सुना। 6 दिन पहले, आखिरकार यह 'चेतावनी ट्यून' हटा दी गई। और तब लोगों ने राहत की साँस ली — कुछ ने हँसी में, कुछ ने गुस्से में और कुछ ने व्यंग्य में।

प्रारंभिक मंशा: जब कॉलर ट्यून बना था जीवन रक्षक संदेश

2020 की शुरुआत में जब कोरोना का पहला केस भारत में आया, तब सरकार की चिंता वाजिब थी। एक अदृश्य वायरस था, जनता में डर था, जानकारी अधूरी थी और भ्रम फैला हुआ था। ऐसे में अमिताभ बच्चन जैसे विश्वसनीय चेहरे की आवाज़ को हर मोबाइल यूज़र तक पहुँचाने का विचार असरदार लगा।

मास्क पहनें, बार-बार हाथ धोएं, भीड़ से बचें, और OTP किसी से साझा न करें—ये सब बातें सही थीं। और जब एक ऐसी आवाज़ यह कहे जिसे आपने दशकों से परदे पर देखा-सुना हो, तो उसका असर होता है। कॉलर ट्यून एक महामारी काल का डिजिटल नैतिक उपदेश बन गया था।

पर एक नैतिक संदेश कब 'एकतरफा सरकारी अनिवार्यता' बन जाए, इसका एहसास न सरकार को हुआ, न उससे जुड़े नीतिनिर्माताओं को।

अवधि का विस्तार: जब चेतावनी बन गई झल्लाहट

समय बीता। कोरोना की लहरें कम हुईं, फिर बढ़ीं, फिर वैक्सीनेशन हुआ, फिर धीरे-धीरे जीवन पटरी पर आने लगा।

लेकिन कॉलर ट्यून नहीं हटी।

हर कॉल पर वही 'नमस्कार, हमारा देश...'।

हर बार वही धीमी आवाज़, वही 30 सेकंड की बंदिश।

अब कल्पना कीजिए कि आपकी गाड़ी एक्सीडेंट हो गई है और आप एम्बुलेंस को कॉल कर रहे हैं — और वहाँ अमिताभ बच्चन पहले OTP साझा न करने की सलाह दे रहे हैं।

या आपके किसी प्रियजन को दिल का दौरा पड़ा है — और आपकी कॉल को रोक रही है एक सरकारी आवाज़।

इस ट्यून का प्रभावी होना अब एक तकनीकी अवरोध में बदल चुका था। यह अब न तो शिक्षित कर रही थी, न ही चेतावनी दे रही थी — यह बस

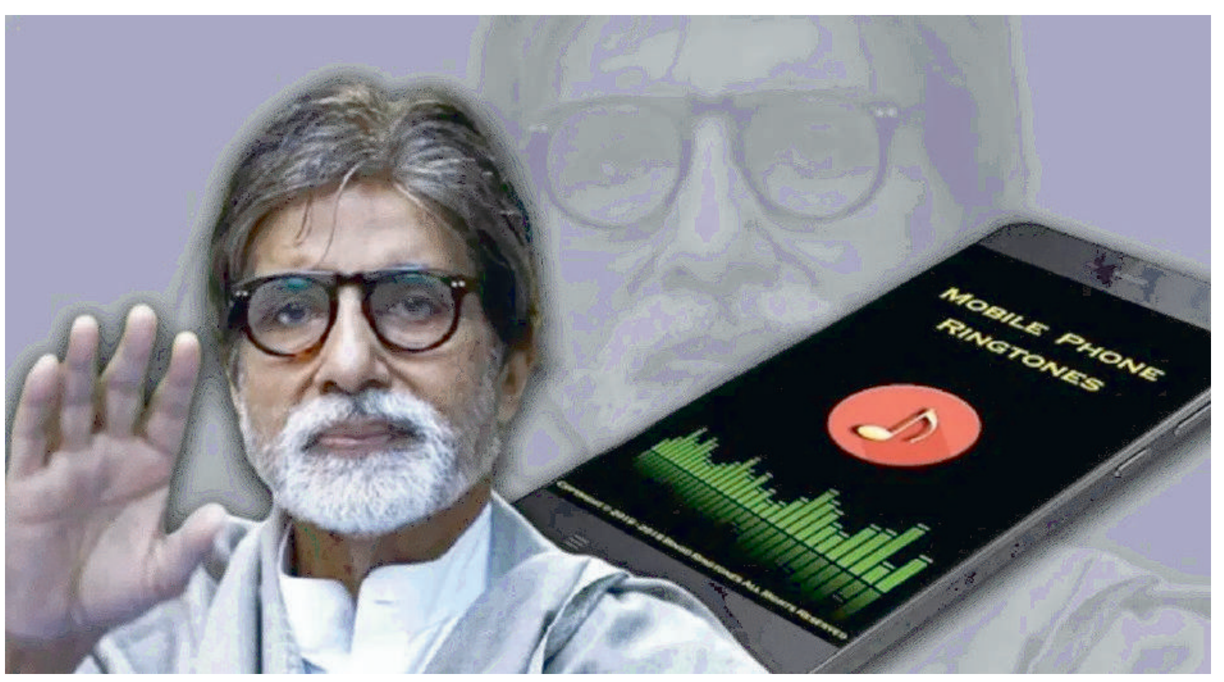

एक दैनिक मानसिक अवरोध बन चुकी थी।

जनता का गुस्सा और सोशल मीडिया का व्यंग्य

किसी नीतिगत गलती की सबसे तीखी प्रतिक्रिया अब सोशल मीडिया देता है। ट्विटर पर #StopCallerTune ट्रेंड करने लगा।

लोगों ने लिखा:

मुझे लगता है मेरी शादी से पहले भी अमिताभ जी की अनुमति चाहिए।

OTP तो नहीं दिया, पर धैर्य ज़रूर दे दिया अमिताभ जी ने।

अब बच्चा पैदा होते ही बोलेगा — नमस्कार, हमारा देश...

मीम्स की बाढ़ आ गई। और तब सरकार को पहली बार अहसास हुआ कि यह जनता की नाराज़गी की हँसी है, स्वागत नहीं।

ट्यून का हटना: एक नीतिगत सुधार या जनदबाव?

6 दिन पहले जब यह कॉलर ट्यून हटाई गई, तो खबर बन गई। मीडिया ने इसे राहत बताया, कुछ ने इसे देर से लिया गया निर्णय कहा।

लेकिन जो बात सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण थी, वह यह कि सरकार ने जनता की बात सुनी। यह आज के समय में दुर्लभ है — खासकर तब, जब जनता की बात कोई 'चुनाव' नहीं, केवल एक 'झुंझलाहट' हो।

यह निर्णय दिखाता है कि नीतियाँ स्थायी नहीं होतीं — वे जनता के अनुभव से आकार लेती हैं।

अमिताभ बच्चन की आवाज़ चाहे कितनी ही विश्वसनीय रही हो, वह जबरन हर कॉल पर न बुलाई जाए — यह समझना ही संवेदनशील प्रशासन का संकेत है।

प्रश्न जो शेष हैं: क्या सरकार को इतना हस्तक्षेप करना चाहिए?

यह कॉलर ट्यून विवाद केवल एक आवाज़ हटाने का मामला नहीं है — यह एक बड़ा सवाल खड़ा करता है:

क्या सरकार के पास यह अधिकार है कि वह हर नागरिक की निजी कॉल के बीच में अपनी बात कहे?

क्या तकनीकी माध्यमों से ऐसी अनिवार्य घोषणाएँ निजता का उल्लंघन नहीं हैं?

और सबसे बड़ा सवाल: जब लोग थक जाएं, तब भी क्या नीति तब तक जारी रहे जब तक वह 'ऊपर से हटाई न जाए'?

जन-नीति बनाम जन-संवेदना

इस पूरे प्रकरण में एक सबक है — सरकार चाहे तो कितनी भी प्रभावशाली योजना लागू करे, लेकिन हर योजना का जीवनकाल होता है।

जनसंवेदना, तकनीकी बदलाव और ज़मीनी अनुभव — इन सबको समय रहते समझना ही असल शासन है।

OTP साझा न करने की बात अब जनता जान चुकी है।

मास्क पहनना अब एक स्वचालित आदत बन चुकी है।

पर यह भी याद रखना होगा कि अधिकार और जानकारी के बीच संतुलन जरूरी है।

कलेजे पर हथौड़ा क्यों लगा यह ट्यून?

क्योंकि यह हर बार अनचाहे हस्तक्षेप की तरह सामने आई।

क्योंकि यह हर बार उस व्यक्ति की प्राथमिकता को नज़रअंदाज़ करती रही जो कॉल करने जा रहा था।

क्योंकि यह ट्यून अब सूचना नहीं, एक चेतावनी की जबरदस्ती बन गई थी।

अमिताभ बच्चन जैसे कलाकार को भी शायद नहीं पता कि उनकी आवाज़ अब लोगों के लिए 'उपदेश' नहीं बल्कि 'अवरोध' बन चुकी थी।

जब किसी आवाज़ से 'सम्मान' से ज़्यादा 'असहायता' जुड़ जाए — तो समय आ जाता है उसे विश्राम देने का।

टेक्नोलॉजी का उपयोग करें, दुरुपयोग नहीं

कॉलर ट्यून हटाना केवल एक तकनीकी निर्णय नहीं था।

यह एक संकेत है — कि जनता की आवाज़ सुनी गई।

यह याद दिलाता है कि सरकार को सूचना देना है, आदेश नहीं थोपना है।

जनता केवल वोट नहीं देती, वह अनुभव भी करती है। और जब अनुभव चुभने लगें, तब कलम, कैम्पेन और व्यंग्य आवाज़ बन जाते हैं।

रथ में विराजमान हैं चतुर्धाममूर्ति, बड़ादाड में होता है भक्तों और भगवान का अनूठा मिलन

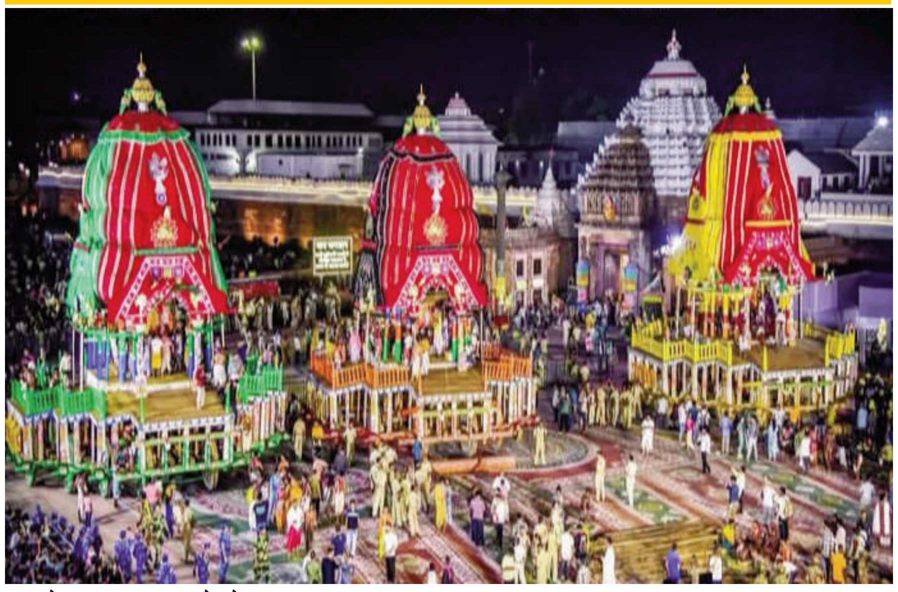

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

पुरी/भूबनेश्वर : भक्तों को बड़ादंड में भगवान से एक अनोखी मुलाकात हुई। चतुर्मूर्ति मंदिर से जुलूस के रूप में आए और उन्हें रथ पर बैठाया गया। भक्त देखते रह गए। बड़ादंड भक्ति के सागर में डूब गया। घंटियों, घड़ियालों और ढोल की ध्वनि से आसपास का वातावरण झूम उठा। जय जगन्नाथ की ध्वनि से आकाश थर्रा उठा।भक्तों का जुलूस पूरा हो चुका है। मंदिर के अंदर नीतिकांति के बाद सबसे पहले श्री सुदर्शन की शोभायात्रा निकलती है। इसके बाद श्री बलभद्र की शोभायात्रा निकाली जाती है। उसके पीछे पीले मुख वाली मां सुभद्रा की शोभायात्रा निकाली जाती है। अंत में करोड़ों ओड़िया लोगों के मोती ब्रह्मण ठाकुर महाप्रभु जगन्नाथ को कमल के पत्ते पर जल की बूंद के समान नंदीघोष में विराजमान किया जाता है। घंटे-घड़ियालों की ध्वनि से भक्तिमय वातावरण निर्मित होता है। चक्रराज श्री सुदर्शन और मां सुभद्रा प्रभार दिलाना रथ पर सवार होते हैं। इसी तरह धोलेरा के भुज रोहिणी नंदन प्रभु बलभद्र को तालध्वज रथ पर विराजमान किया जाता है। अंत में महाप्रभु जगन्नाथ को नंदीघोष रथ पर विराजमान किया जाता है। दोपहर 2 बजे तक ठाकुर की चिता जलाई जाएगी। दोपहर 2:30 बजे ठाकुर का बिशा समाप्त होगा। दोपहर 2:30 से 3:30 बजे के बीच गजपति का जलयात्रा संपन्न हो जाएगा। शाम 4 बजे तक चारमाल बांध दिए जाएंगे, घोड़े और सारथी तैयार हो जाएंगे। बताया जा रहा है कि शाम 4 बजे से रथ खींचने का काम शुरू हो जाएगा।

हिन्दी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है

भारत विश्व का एक ऐसा देश है, जहां भाषाओं की विविधता पाई जाती है। यहां अलग-अलग समूहों द्वारा अनेक भाषाएं बोली,पढ़ी,लिखी व समझी जाती हैं, लेकिन भारत के संविधान में हिंदी को भारत की राजभाषा (यानी कि आफिशियल लैंग्वेज) का दर्जा प्राप्त है। गौरतलब है कि भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार, देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह(हिंदी)भारत की मातृभाषा भी है तो भारत की प्रथम राजभाषा भी। गौरतलब है कि भारत की द्वितीय राजभाषा अंग्रेजी है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष २011 की भाषायी जनगणना के अनुसार: भारत में 121 मातृभाषाएँ हैं। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार 55% आबादी हिंदी को या तो मातृभाषा के रूप में या अपनी दूसरी भाषा के रूप में जानती है तथा आज दुनिया में लगभग 60-65 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं, जिससे यह विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।सच तो यह है कि अंग्रेजी और मंदारिन(मंडारिन) चीनी के बाद हिंदी का स्थान प्रमुख है। हिंदी न केवल भारत में, बल्कि आज विश्व के कई अन्य देशों जैसे कि नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, और पाकिस्तान में भी बोली, पढ़ी, लिखी और समझी जाती है और विश्व के बहुत से देशों ने आज हिंदी के महत्व,इसकी वैज्ञानिकता,इसकी दमदार शब्दावली को सहज ही स्वीकार किया है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 1971 से वर्ष २011 के बीच हिंदी बोलने वालों की संख्या २.6 गुना बढ़कर २0.२ करोड़ से 52.8 करोड़ हो गई। वर्ष २011 के बाद से अब तक इस संख्या में बहुत अधिक इजाफा हुआ है और यह हम सभी को गौरवान्वित महसूस कराता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रभाव छोड़ रही है और निरंतर आगे बढ़ रही है। हाल ही में यानी कि २6 जून २0२5 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में हमारे देश के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने केंद्र सरकार के राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने यह बात कही कि 'हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की विरोधी नहीं है, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं की मित्र है।' बहरहाल, कहना चाहूंगा कि आज हमारे देश में भाषा को लेकर तरह-तरह की राजनीति की जाती है, इसे कदापि ठीक व जायज़ नहीं ठहराया जा सकता है। इससे बड़ी विडंबना की व दु:खद बात भला और क्या हो सकती है कि आज भाषाओं को लेकर कहीं भी कोई न कोई जुबानी जंग छिड़ जाती है। हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि लोगों को आपस में जोड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भाषा को ही माना जाता है और हिंदी हमारे देश की वह भाषा है, जो सदियों सदियों से हमारे देश भारत को एकता व अखंडता के सूत्र में पिरोए हुए हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि हिंदी किसी भी भाषा की विरोधी कतई नहीं है। हिंदी वह भाषा है, जिसमें हमारे देश की सनातन संस्कृति की झलक मिलती है, तथा यह हमारे सामाजिक ताने-बाने को मजबूत व सुदृढ़ रखे हुए है, स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर, हमारे देश की स्वतंत्रता प्राप्ति और इसके बाद भी निरंतर अब तक हिंदी अपनी संस्कृतनिष्ठता,व्यवस्थितता और अपने लचीलेपन से इसका प्रयोग ज्ञान-विज्ञान से लेकर साहित्य, और संचार के विभिन्न माध्यमों में लगातार बढ़ता ही चला जा रहा है, जो हमें गौरवान्वित करती है। हमें अपनी मां बोली हिंदी पर या यूं कहें कि अपनी मातृभाषा पर गर्व करना चाहिए। हम अंग्रेजी का विरोध नहीं करें, क्यों कि कोई भी भाषा कभी भी अच्छी बुरी नहीं हो सकती है। सभी भाषाओं का अपना-अपना महत्व है। इसलिए हमें यह चाहिए कि हम सभी भाषाओं या ज्यादा से ज्यादा भाषाओं को सीखने का प्रयास करें, यह हमारे ज्ञान में बढ़ोत्तरी करेगा वहीं व्यवहार में भी ये भाषाएं हमारे कहीं न कहीं अवश्य काम में आयेंगी, लेकिन हमें यह चाहिए कि भारत के निवासी होते हुए हम सबसे ज्यादा तवज्जो अपनी मातृभाषा हिंदी को दें। अपनी मातृभाषा को छोड़कर,उसे तिलांजलि देकर, दूसरी भाषाओं को अपनाकर, या उन्हें सीखकर हम कभी भी आगे नहीं बढ़ सकते, क्यों कि जो बात हम अपनी मातृभाषा में सहजता और सरलता से कह सकते हैं, अभिव्यक्ति दे सकते हैं,वह शायद विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं। हिंदी भाषा भारत की विविध संस्कृतियों को एकजुट करने और सामाजिक एकीकरण की भावना पैदा करने में एक सेतु का काम करती है। महात्मा गांधी जी ने राष्ट्रभाषा के बारे में यह बात कही है कि 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।आर्यों की सबसे प्राचीन भाषा हिन्दी ही है और इसमें तद्भव शब्द सभी भाषाओं से अधिक है। आज भाषा के नाम पर राजनीति होती है, यह बहुत ही ग़लत है। जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा (हिंदी) का भक्त होना चाहिए। हाल फिलहाल, पाठकों को बताता चलूं कि राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान हमारे गृहमंत्री जी ने भी यह बात कही है कि 'किसी भी विदेशी भाषा का विरोध नहीं होना चाहिए, लेकिन हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व भी करना चाहिए।' वास्तव में हमें यह चाहिए कि हम मातृभाषा में सोचने, बोलने के साथ-साथ उसे अभिव्यक्त करने की भावना को भी प्रोत्साहित करें। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हाल ही में यह कहा है कि '...पिछले कुछ दशकों में भाषा का इस्तेमाल भारत को बांटने के साधन के रूप में किया गया। वे इसे तोड़ नहीं पाए, लेकिन प्रयास किए गए। हम सुनिश्चित करेंगे कि हमारी भाषाएं भारत को एकजुट करने का सशक्त माध्यम बनें।' महाराष्ट्र और कर्नाटक समेत कई राज्यों में राजभाषा को लेकर सवाल उठाए गए, तमिलनाडु ने तो जैसे हिंदी विरोध में राजनीतिक मोर्चा खोल रखा है। वास्तव में यह बहुत दुखद है, ऐसा नहीं होना चाहिए। आज भारत दुनिया का एक मात्र ऐसा देश है, जहां राजभाषा के लिए एक अलग विभाग है तथा इसके कार्यान्वयन के लिए अधिकारी व हिंदी अनुवादक मौजूद हैं। दुनिया में ऐसा उदाहरण कहीं अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। हम हमारे ही देश में भाषा की लड़ाई लड़ रहे हैं। लेकिन हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि आज संचार की भाषा हिन्दी है, बाजार और सिनेमा से लेकर आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है, जहां हिंदी का प्रयोग नहीं किया जा रहा है। हमें यह चाहिए कि हम किसी विदेशी भाषा का विरोध कतई नहीं करें। भारत के वासी होते हुए हमारा यह परम कर्तव्य बनता है कि हम आग्रह अपनी भाषा(हिंदी) के गौरव का करें। जैसा कि केंद्रीय गृह मंत्री जी ने कहा है कि 'आग्रह अपनी भाषा में सोचने का होना चाहिए। हमें गुलामी की मानसिकता से मुक्त होना चाहिए।' सच तो यह है कि जब तक हम अपनी भाषा पर गर्व नहीं करेंगे, अपनी भाषा में अपनी बात नहीं कहेंगे, तब तक हम गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सकते हैं। दिल्ली में राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान हाल ही में गृहमंत्री जी ने सभी राज्य सरकारों से आग्रह किया है कि वे स्थानीय भाषाओं में चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसी उच्च शिक्षा प्रदान करने की पहल करें। उन्होंने आश्वासन दिया है कि केंद्र सरकार इस दिशा में राज्यों को हरसंभव सहयोग देगी।' पाठकों को बताता चलूं कि गृह मंत्री जी ने इस बात पर भी जोर दिया कि प्रशासनिक कार्यों में भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। आज यह देखने को मिलता है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच प्रतिस्पर्धा है। प्रतिस्पर्धा अपने स्थान पर है, लेकिन हमें हिंदी के योगदान को हमेशा अपने जेहन में रखना चाहिए। हिंदी किसी भी भाषा की विरोधी नहीं है अपितु यह सहयोगी है। हिंदी सबको साथ लेकर चलती है। वास्तव में भाषाएं मिलकर देश के सांस्कृतिक आत्मगौरव को ऊंचाई तक ले जा सकती हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम मानसिक गुलामी की भावना से मुक्ति पाने पर जोर दें। हमें यह याद रखना चाहिए कि जब तक कोई व्यक्ति अपनी भाषा पर गर्व महसूस नहीं करता और खुद को उसी भाषा में अभिव्यक्त नहीं करता, तब तक वह पूरी तरह आजाद नहीं हो सकता। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास और प्रसार के लिए केंद्र सरकार को निर्देश देता है। इसका उद्देश्य हिंदी को भारत की 'सामासिक संस्कृति' के तत्वों को व्यक्त करने का एक माध्यम बनाना है। गौरतलब है कि अनुच्छेद 351 में, केंद्र सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है कि हिंदी भाषा का विकास इस तरह से हो कि वह भारत की समग्र संस्कृति को व्यक्त करने का एक माध्यम बन सके। इसके लिए, हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं और संस्कृत से शब्द भंडार और अभिव्यक्तियों को ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि यह अधिक समृद्ध और व्यापक बन सके। संक्षेप में कहें तो अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास और प्रसार के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। वास्तव में, यह सुनिश्चित करता है कि यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रतिबिंबित करे और सभी भारतीयों के लिए एक सामान्य भाषा बन सके। अंत में यही कहूंगा कि हिन्दी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है। महात्मा गांधी ने यह बात कही थी कि 'हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहाँ हो ही नहीं सकता।' वास्तव में राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।अनंत गोपाल शेवड़े ने कहा है कि 'राष्ट्रभाषा हिन्दी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।' और यह बात हम सबको अपने जेहन में रखनी चाहिए।के.सी. सारंगमठ कहते हैं कि 'दक्षिण की हिन्दी विरोधी नीति वास्तव में दक्षिण की नहीं, बल्कि कुछ अंग्रेजी भक्तों की नीति है।'सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

विश्व प्रसिद्ध पुरी रथ यात्रा के अवसर पर विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल द्वारा सेवा कार्य

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

पुरी/भूबनेश्वर : पुरी में विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा के अवसर पर विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित सेवा स्टाल पर भारत सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, राज्य कैबिनेट मंत्री सूरज सूर्यवंशी, विधायक बाबू सिंह, पुरी सांसद संबित पात्रा, पिपिली विधायक आश्रित पटनायक, भा.हि.पा. ओडिशा (पूर्व) परिहेम संगठन मंत्री शरत चंद्र प्रधान, परिहेम संपादक पंडित महेश साहू, संयुक्त संपादक उमा शंकर आचार्य, भा.हि.पा. ओडिशा (पूर्व) संयोजक पर्वत भूषण त्रिपाठी, परिहेम प्रचारक प्रसार एवं मेजर अर्धेंदु शेखर दास सहित अनेक वरिष्ठ सांसद, विधायकगण दिनभर भा.हि.पा. द्वारा आयोजित सेवा स्थल पर आते रहे तथा यथा संभव मदद एवं सहयोग के लिए हाथ बढ़ाते रहे। परिषद ने ऐसे महान कार्य के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

नीति आयोग रैंकिंग में झारखंड का चतरा जिला ने मारी बाजी, मिलेगा 10 करोड़

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड नीति आयोग द्वारा आयोजित ऑनलाइन समीक्षा बैठक में मार्च 2025 की डेल्टा रैंकिंग के अनुसार चतरा जिला ने उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए देश के 112 आकांक्षी जिलों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह उपलब्धि जिला प्रशासन एवं विभिन्न विभागों के संयुक्त प्रयासों, नवाचारों तथा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन का प्रयास जारी हैं।

नीति आयोग द्वारा यह जानकारी शुक्रवार को ऑनलाइन बैठक के माध्यम से साझा की गई, जिसमें चतरा जिले की बहुआयामी प्रगति विशेषकर स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि, वित्तीय समावेशन तथा बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में सराहा गया। उल्लेखनीय है कि शीर्ष प्रदर्शन करने वाले जिले को नीति आयोग द्वारा 10 करोड़ रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी, जिसका उद्देश्य जिला स्तर पर विकासात्मक पहलों को और अधिक गति से होगा।

इस उपलब्धि पर उपायुक्त कीर्ति श्री ने जिले की पूरी प्रशासनिक टीम, विभागीय अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और जनता को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान जिले के लिए गर्व का विषय है और हम सभी मिलकर इसे बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह सफलता आकांक्षी जिला कार्यक्रम के उद्देश्यों को साकार करने की दिशा में चतरा जिले की मजबूत पहल और सतत प्रयास का प्रमाण है। इसके अलावा गढ़वा को शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन परफॉमेंस के लिए भी चुना गया है।

कवि गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण' इन्दौर का पद खयाल में

एक वर्षा गीत

=========

नभ को निहार कहती सुनारि सखि! लगातार बरसे बदरा।
पहले फुहार फिर धारदार फिर धुआँधार बरसे बदरा।।

सुन री ! कठोर चितचोर छोर पर घटाटोप बरसे बदरा।।
हिय को हिलोर जिय को विभोर कर सराबोर बरसे बदरा।।

चहुँ ओर घोर घनघोर शोर कर नशाखोर वर से बदरा।
तब पोर-पोर उर की किनोर भर उठी जोर बरसे बदरा।।

किलकार मार कर को पसार बन अदाकार बरसे बदरा।
पुचकार यार दिलदार प्यार कर कलाकार बरसे बदरा।।
नभ को निहार कहती --------।।

बम से भड़ाम गिरते धड़ाम करते प्रणाम बरसे बदरा।
लख ताम-झाम हँसते सकाम जब धरा-धाम बरसे बदरा।।

घनश्याम शाम मग में अनाम जिस घड़ी राम! बरसे बदरा।
सच खुले आम जग उठा काम ऐसे ललाम बरसे बदरा।।

फिर छोड़-छोड़ कर को मरोड़ तन को झँझोड़ बरसे बदरा।
अब जोड़-जोड़ दुखता करोड़ रस सा निचोड़ बरसे बदरा।।

पट को सुधार लट को सँवार तब जलागार बरसे बदरा।
सरकार हारकर तार-तार कर गए छार बरसे बदरा।।
नभ को निहार कहती ------ ।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'
'वृत्तायन' 957, स्कीम नं. 51

आना जाना लगा रहता है।

ये दुनिया जहान का मेला,
लगा हुआ है संसार में
कोई साथी नहीं है यहाँ तेरा,
क्योंकि आना-जाना लगा रहता है ।

ज़िन्दगी की डोर कब टूट जाए,
पता ही नहीं चलता है जीवन में
कोई किसी का नहीं होता,
क्योंकि आना-जाना लगा रहता है ।

रिश्ते-नाते बंधन सब खो जाते हैं,
परोपकार अच्छे बोल व संस्कार याद
आते हैं
जीवन में ज़िन्दगी कब दगा दे जाए!
क्योंकि आना-जाना लगा रहता है ।

राह में राही रुकना नहीं है तुझे कभी,
क्योंकि चार दिन है तेरे पास।
फिर क्यों दु:खी होता है तू, चलते रह,
क्योंकि, आना-जाना लगा रहता है॥

प्रेषक - रचनाकार हरिहर सिंह चौहान
जबरी बाग़ नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

हिन्दी भाषा डांट कांम मंच इन्दौर द्वारा गद्य में हरिहर सिंह चौहान को मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान मिला

परिवहन विशेष न्यूज

मातृभाषा हिन्दी को और लोकप्रिय बनाने के अभियान की दिशा में हिन्दीभाषा डॉट कॉम परिवार सतत स्पर्धा करा रहा है। इसी निमित्त 'आतंक, विनाश और ज़िंदगी' ('पहलगाम हमला' विशेष- २२ अप्रैल) विषय पर ९८ वीं प्रतियोगिता में गद्य में प्रथम विजेता बनने का मौका हरिहर सिंह चौहान को मिला है, तो पद्य में संजय वर्मा 'दृष्टि' प्रथम आए हैं।

परिणाम जारी करते हुए मंच-परिवार की सह-सम्पादक श्रीमती अर्चना जैन और संस्थापक-सम्पादक अजय जैन 'विकल्प' ने सभी रचनाशिल्पियों को हार्दिक बधाई दी है। श्रीमती जैन ने बताया कि प्राप्त रचनाओं में से श्रेष्ठता अनुरुप निर्णायक मंडल ने गद्य में 'अब विश्व देखेगा भारत की ताकत' के लिए श्री चौहान (इन्दौर, मप्र) को प्रथम चुना है। ऐसे ही द्वितीय स्थान 'आतंक का विनाश ही सुरक्षित ज़िंदगी' आलेख हेतु डॉ. आशा गुप्ता 'श्रेया' (जमशेदपुर, झारखण्ड) एवं 'आतंक की घाटी में लहूलुहान उम्मीदें' पर तीसरा स्थान डॉ. मुकेश 'असीमित' (गंगापुर सिटी, राजस्थान) को दिया गया है।

आपने बताया कि मंच संयोजक प्रो.डॉ. सोनाली सिंह, मार्गदर्शक डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य' (दिल्ली), परामर्शदाता डॉ. पुनीत द्विवेदी (मप्र), विशिष्ट सहयोगी एच.एस. चाहिल व प्रचार प्रमुख श्रीमती ममता तिवारी 'ममता' (छग) ने सभी विजेताओं एवं सहभागियों को हार्दिक बधाई दी है। श्रीमती जैन ने बताया कि, हिंदी साहित्य अकादमी (मप्र) से अभा नारद मुनि पुरस्कार-सम्मान एवं १ राष्ट्रीय कीर्तिमान प्राप्त १.५५ करोड़ दर्शकों-पाठकों के अपार स्नेह और १० सम्मान पाने वाले इस मंच द्वारा आयोजित इस स्पर्धा में पद्य वर्ग में पहला स्थान 'कब तक सहेंगे'?' कविता पर 'दृष्टि' (मनावर, मप्र) ने पाया है, तो गोपाल मोहन मिश्र (दरभंगा, बिहार) अपनी रचना 'खून बहाकर पियोगे सिंधु का पानी ?' के लिए दूसरे विजेता बनने में सफल रहे हैं। इसी वर्ग में 'हे ! जल-दूत कह दो जा के'' पर सौ. निशा बुधे झा 'निशामन' (जयपुर, राजस्थान) को स्पर्धा का तृतीय विजेता चयनित किया गया है।

ओडिशा में भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा

ओडिशा के पुरी में हर साल भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकलती है। जगन्नाथ रथ यात्रा आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से शुरू की जाती है। इस रथयात्रा में भगवान श्रीकृष्ण, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा का श्रृंगार करके भव्य रथों में बैठाकर उनकी रथयात्रा निकाली जाती है। 2025 में यह रथयात्रा 26 से 27 जून तक चलेगी। भगवान जगन्नाथ के भक्त इस अद्भुत रथयात्रा में शामिल होने के लिए हर साल यहां आते हैं।

भगवान जगन्नाथ के दर्शन के बाद जरूर खीचें रथ

============================

भगवान जगन्नाथ के रथ को भक्तों द्वारा खींचने की परंपरा बहुत पुरानी है। भक्त दर्शन करने के बाद बारी-बारी से भगवान जगन्नाथ का रथ खींचते हैं। भगवान जगन्नाथ का रथ खींचने में किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं देखा जाता। कोई भी भक्त अपनी श्रद्धाभाव से भगवान जगन्नाथ का रथ खींच सकते हैं। जगन्नाथ मंदिर से तीनों रथों को खींचकर भक्त 4 किलोमीटर दूर गुंडीचा मंदिर लेकर जाते हैं। धार्मिक मान्यता है कि भगवान जगन्नाथ का रथ खींचने वाला व्यक्ति जीवन-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। हर किसी को 13 कदम ही रथ खींचने की अनुमति होती है।

जगन्नाथ मंदिर जाएं तो प्रसाद जरूर खाएं

============================

जगन्नाथ मंदिर का प्रसाद भी बहुत निराला है। जगन्नाथ मंदिर की रसोई को दुनिया की सबसे बड़ी रसोई माना जाता है। करीब 500 रसोइए और 300 सहयोगी मिलकर प्रसाद बनाते हैं। प्रसाद बनाने के लिए 7 बर्तनों को लाइन से एक के ऊपर एक रखा जाता है और नीचे एक ही लकड़ी लगाकर सातों बर्तनों का खाना एक ही आंच में बना दिया जाता है। इसमें सबसे ऊपर रखे बर्तन का खाना सबसे पहले पकता है। धार्मिक मान्यता है कि जगन्नाथ मंदिर का प्रसाद खाने से सौभाग्य की वृद्धि होती है।

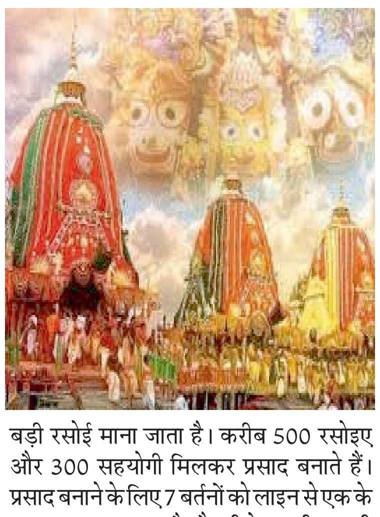

नीलचक्र और ध्वज के दर्शन जरूर करें

============================

जगन्नाथ पुरी में आपको हर मंदिर के ऊपर सुदर्शन चक्र बने ध्वज के दर्शन जरूर करें। सबसे दिलचस्प बात यह है कि आप यहां लगे ध्वज को जिस तरफ से भी देखेंगे, आपको सुदर्शन चक्र बिल्कुल बीच में ही नजर आएगा। इसके अलावा मंदिर के शीर्ष पर लगे नीलचक्र के दर्शन भी जरूर करें।

पुरी में कड़ी सुरक्षा के बीच AI की कड़ी नजर

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : श्रीगुंडिचा यात्रा के लिए रथ, पथ तैयार। भक्त और भगवान एक साथ होंगे। यात्रा के लिए किसी को भी जल्दी नहीं है। सेवक और व्यवस्थापक बड़ठाकुरा की यात्रा की तैयारियों में व्यस्त हैं। रथ यात्रा शाम 4 बजे शुरू होगी। लाखों भक्तों के आगमन को ध्यान में रखते हुए तीर्थस्थल पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है।पुरी में सुरक्षा के कड़े इंतजाम। श्रीक्षेत्र में कड़ी सुरक्षा। पुरी AI निगरानी में है। जगह-जगह 275 AI कैमरे लगाए गए हैं। उत्तरा चैक से पुरी तक CCTV निगरानी। पुरी-कोणार्क रोड पर कड़ी सुरक्षा। प्रशासन किसी भी तरह की घटना को रोकने के लिए सतर्क है। बम निरोधक दस्ता तैनात है।आतंकवाद निरोधक दस्ता सतर्क है। विशेष सामरिक इकाई जैसी सुरक्षा। 205 प्लाटून पुलिस बल तैनात। 21 आईपीएस, 1200 अधिकारी तैनात। यातायात प्रबंधन के लिए 50 प्लाटून पुलिस बल और पुलिस के साथ घरेलू सुरक्षा दल तैनात।

आज विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा है। चतुर्धामूर्ति की नवदिनैव यात्रा। सिंहद्वार चक्र पर तीन रथ सवार हैं। नंदीघोष, द्वारकासद्दलन और तालध्वज रथ तैयार हैं। तीन रथों में विराजमान होंगे भगवान। मंदिर में उमड़ रहे लाखों भक्त। महाप्रभु का इंतजार करते भक्त। बड़ादंडा में भक्तिमय माहौल।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023